7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 औद्योगिक गलियारे के लिए 12 एकड़ जमीन की हुई रजिस्ट्री, इन गांवों की जानी है जमीन

5 भरोसे का कत्ल- जिसे सात साल पढ़ाया..

8 आईसीसी टूर्नामेंट्स में दोनों टीमों का रिकार्ड

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 15 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 06 नवम्बर, 2023

पति की दीर्घायु के लिए महिलाएं बुधवार को करवा चौथ का निर्जल व्रत रखी। ऐसी मान्यता है कि करवा चौथ का व्रत करने से पति के जीवन में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं आता हैं और उन्हें दीर्घायु प्राप्त होती है।

नेपाल में भूकंप से भीषण तबाही

शुक्रवार देर रात आए 6.4 तीव्रता वाले इस भूकंप में कई इमारतें ढह गई हैं। इसमें 140 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हैं और कुछ मलबे में दबे हैं।

नेपाल में शुक्रवार रात तेज भूकंप आया. राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 6.4 मापी गई. भूकंप का केंद्र जाजरकोट जिले के लामिडांडा में था. भूकंप का केंद्र नेपाल में 28.84 डिग्री अक्षांश और 82.19 डिग्री देशांतर पर 10 किमी की गहराई पर था. भूकंप से नेपाल में भीषण नुकसान हुआ है और अब तक कम से कम 129 लोगों की मौत हो चुकी है.

दिल्ली–एनसीआर, यूपी, बिहार और उत्तराखंड सहित उत्तर भारत में तेज भूकंप आया है। शुरुआती जानकारी के अनुसार भूकंप के झटके करीब 20 सेकेंड तक महसूस किये गये। भूकंप का केंद्र नेपाल बताया जा रहा है। भूकंप के तेज झटकों के कारण लोगों में हड़कंप मच गया। लोग घरों से बाहर निकल आए। लोगों का कहना है कि उन्होंने काफी देर तक झटके महसूस किए। रिक्टर पैमान पर भूकंप की तीव्रता 6.4 मापी गई है।

दिल्ली। भारत के कई राज्यों में शुक्रवार देर रात भूकंप के झटके महसूस किए गए। इसी क्रम में नेपाल की धरती भी कांपी, यहां इसके भयावह परिणाम देखे गए। अब तक इस आपदा में मृतकों की संख्या १२८ पहुंच गई है। आपदा को लेकर नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल ने भूकंप से हुई मानवीय और भौतिक क्षति पर दुख व्यक्त किया।

क्यों आता है भूकंप?

पृथ्वी के अंदर ७ प्लेट्स हैं, जो लगातार घूमती रहती हैं। जहां ये प्लेट्स ज्यादा टकराती हैं, वह जोन फ ल्ट लाइन कहलाता है। बार-बार टकराने से प्लेट्स के कोने मुड़ते हैं। जब ज्यादा दबाव बनता है तो प्लेट्स टूटने लगती हैं। नीचे की ऊर्जा बाहर आने का रास्ता खोजती हैं और डिस्टर्बेंस के बाद भूकंप आता है।

जानें क्या है भूंकप के केंद्र और तीव्रता का मतलब?

भूकंप का केंद्र उस स्थान को कहते हैं जिसके ठीक नीचे प्लेटों में हलचल से भूगर्भीय ऊर्जा निकलती है। इस स्थान पर भूकंप का कंपन ज्यादा होता है। कंपन की आवृत्ति ज्यों-ज्यों दूर होती जाती हैं, इसका प्रभाव कम होता जाता है। फिर भी यदि रिक्टर स्केल पर ७ या इससे अधिक की तीव्रता वाला भूकंप है तो आसपास के ४० किमी के दायरे में झटका तेज होता है। लेकिन यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि भूकंपीय आवृत्ति ऊपर की तरफ है या दायरे में। यदि कंपन की आवृत्ति ऊपर को है तो कम क्षेत्र प्रभावित होगा।

कैसे मापी जाती है भूकंप की तीव्रता और क्या है मापने का पैमाना?

भूंकप की जांच रिक्टर स्केल से होती है। इसे रिक्टर मैग्नीट्यूड टेस्ट स्केल कहा जाता है। रिक्टर स्केल पर भूकंप को १ से ९ तक के आधार पर मापा जाता है। भूकंप को इसके केंद्र यानी एपीसेंटर से मापा जाता है। भूकंप के दौरान धरती के भीतर से जो ऊर्जा निकलती है, उसकी तीव्रता को इससे मापा जाता है। इसी तीव्रता से भूकंप के झटके की भयावहता का अंदाजा होता है।

लखनऊ में 31 दिसंबर तक धारा 144 लागू

पुलिस को किया गया अलर्ट, धरना–प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबंध

लखनऊ। लखनऊ में ३१ दिसंबर तक के लिए धारा १४४ लागू की गई है। इस दौरान पांच से अधिक लोगों के एक साथ एकत्र होने पर रोक लगी रहेगी। इसके अलावा, विधान भवन की तरफ जाने वाले मार्गों पर भी रोक लगा दी गई है। राजधानी लखनऊ में धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भैयादूज, छठ पूजा, गुरुनानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा और क्रिसमस पर्व के चलते धारा १४४ लागू की गई है। जेसीपी उपेंद्र अग्रवाल ने धारा १४४ को लेकर लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट को अलर्ट रहने के दिशा-निर्देश जारी किए है साथ ही विधान सभा की तरफ जाने वाले रास्तों पर घोड़ा गाड़ी, ट्रैक्टर-ट्राली आदि

पर भी रोक रहेगी। यह आदेश आज से ३१ दिसंबर २०२३ तक लागू रहेगा।

पांच या पांच से अधिक लोगों के एक साथ एकत्र होने पर होगी कार्रवाई

जेसीपी उपेंद्र अग्रवाल ने कहा है कि दो नवंबर से ३१ दिसंबर २०२३ तक विभिन्न कार्यक्रम त्योहार के साथ ही विभिन्न प्रवेश परीक्षाएं आयोजित हो रही हैं। वहीं, वर्तमान में विभिन्न पार्टी कार्यकर्ताओं/भारतीय किसान संगठनों एवं विभिन्न प्रदर्शनकारियों द्वारा धरना प्रदर्शन आदि कार्यक्रम को देखते हुए लखनऊ में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने हेतु निषेधाज्ञा अन्तर्गत धारा १४४ लागू की जा रही है। इस दौरान किसी भी सार्वजनिक स्थान पर पांच या पांच से अधिक लोगों के एकत्र होने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

विधान भवन की तरफ जाने वाले मार्गों पर रहेगी सख्ती

- धारा १४४ के तहत विधान भवन की परिधि में ट्रैक्टर, ट्रैक्टर-ट्राली, घोड़ागाड़ी, बैलगाड़ी, भैंसागाड़ी, तांगा गाड़ी के साथ हथियार, ज्वलनशील पदार्थ, सिलेण्डर आदि ले जाने पर पूरी तरह से पाबंदी रहेगी।

इसके साथ ही उधर जाने वाले रास्ते पर किसी भी प्रकार के धरना प्रदर्शन पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित रहेंगे।

- सरकारी दफ्तरों और विधानसभा भवन के ऊपर व आसपास एक किलोमीटर के दायरे में ड्रोन से शूटिंग करना भी पूर्णतया प्रतिबंधित होगा साथ ही लखनऊ में किसी भी प्रकार का धरना प्रदर्शन निर्धारित धरना स्थल (इकोगार्डन) छोड़कर अन्य स्थान पर बिना अनुमति करने पर नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।

मेडिकल कालेजों में खोले जाएंगे नशा मुक्ति केंद्र

डिप्टी सीएम ने कालेज प्राचार्यो को दिए निर्देश

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने क लेज प्राचार्यों को नशा मुक्ति केंद्र खोलने के निर्देश दिए हैं। यहां मरीजों को दवा के साथ काउंसिलिंग भी की जाएगी। नशे के खिलाफ यूपी सरकार ने एक और पहल की है। सभी सरकारी मेडिकल क लेजों में नशा मुक्ति केंद्र खोलने का फैसला लिया गया है। डिप्टी सीएम ने सभी कालेजों के प्राचार्यों को नशा मुक्ति केंद्र खोलने के निर्देश दिए हैं। प्रदेश के सभी ७५ जिलों में मेडिकल कालेज खोलने की कवायद चल रही है। इसका मकसद अधिक से अधिक डाक्टर तैयार किए जाना है। साथ ही रोगियों को घर के नजदीक समय पर बेहतर इलाज उपलब्ध कराया जा सकेगा। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने बताया कि मेडिकल कालेज में रोगियों को सभी तरह की बीमारियों का इलाज मुहैया कराने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। क लेजों में आधुनिक मशीनें स्थापित कराई जा रही हैं।

दवा के साथ काउंसिलिंग होगी

डिप्टी सीएम ने बताया कि प्रदेश को नशा मुक्त करने की दिशा में भी प्रयास किया जा रहा है। इसी क्रम में सभी सरकारी मेडिकल क लेजों में नशा मुक्ति केंद्र खोले जाएंगे। यह केंद्र मानसिक स्वास्थ्य या मेडिसिन विभाग के तहत चलेंगे। नशा छोड़ने की इच्छा रखने वाले केंद्र में आकर इलाज हासिल कर सकेंगे। रोगियों की काउंसिलिंग होगी। नशे से होने वाले शारीरिक व मानसिक नुकसान से भी रोगियों को अवगत कराया जायेगा।

ओपीडी व भर्ती कर इलाज मिलेगा

डाक्टर की सलाह पर रोगियों को दवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। ओपीडी के साथ जरूरत पड़ने पर रोगियों को भर्ती कर इलाज उपलब्ध कराया जाएगा साथ ही समय-समय पर जागरुकता अभियान भी चलाया जाएगा। इससे काफी हद तक प्रदेश को नशा मुक्त बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने बताया कि हाल ही में गाजीपुर मेडिकल कालेज में नशा मुक्ति केंद्र की शुरूआत की गई। धीरे-धीरे बाकी मेडिकल क लेजों में नशा मुक्ति केंद्र खोले जाएंगे।

सम्पादकीय

महुआ मोइत्रा समेत कई बड़े नेताओं के फोन सरकार द्वारा टैप करने का विवाद एक बार फिर खड़ा हो गया है

विपक्षी नेताओं की फोन टैपिंग

महुआ मोइत्रा समेत कई बड़े नेताओं के फोन सरकार द्वारा टैप करने का विवाद एक बार फिर खड़ा हो गया है। मंगलवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में राहुल गांधी ने यह बात सामने लाई है। दरअसल प्रसिद्ध फोन निर्माता कम्पनी एप्पल का इस्तेमाल करने वाले कई ऐसे विपक्षी नेताओं को कम्पनी की ओर से ईमेल मिला है कि जिसमें चेतावनी दी गई है कि उनके फोन राज्य समर्थित हमलावर (स्टेट स्पांसर्ड अटैकर्स) द्वारा टैप हो रहे हैं। अनेक विपक्षी नेताओं ने इसकी पुष्टि भी की है। राहुल ने इस बारे में कहा है कि उन्हें इसका कोई फर्क नहीं पड़ता और सरकार चाहे तो बेशक उनका फोन लेकर जा सकती है, परन्तु यह न केवल निजता का हनन है बल्कि लोकतंत्र में विरोध की आवाज को दबाने की भी कोशिश है जिसका विरोध किया जाना चाहिये। कई विपक्षी नेताओं ने दावा किया कि उन्हें अपने आईफोन पर एक अलर्ट प्राप्त हुआ, जिसमें बताया गया है कि श्राज्य प्रायोजित हमलावर उनके फोन से छेड़छाड़ करने की कोशिश कर रहे हैं।श हालांकि इसकी प्रतिक्रिया में एप्पल ने कहा है कि वह खतरे से आगाह कर रही है परन्तु इसके लिये किसी भी राज्य-प्रायोजित हमलावर विशेष को जिम्मेदार नहीं ठहरा रही है। अलबत्ता उसका कहना है कि श्ऐसे हैकर्स वित्तीय रूप से बहुत अच्छे से पोषित और परिष्त हैंश। कम्पनी के अनुसार श्ऐसे हमलों का पता लगाना कुछ गुप्त संकेतों पर निर्भर करता है जो ज्यादातर आधे-अधूरे होते हैं। बयान में यह भी साफ किया गया है कि संभव है कि कुछ सूचनाएं गलत चेतावनी हो सकती हैं या कुछ हमलों का पता न चल पाए।श कंपनी ने यह भी कहा है कि वह इस बारे में जानकारी देने में असमर्थ है कि किस कारण से उसे एलर्ट जारी करना पड़ा है क्योंकि इससे राज्य प्रायोजित हमलावर भविष्य में और सावधान होकर काम करेंगे।

इस जानकारी के सार्वजनिक होने से हड़कम्प मच गया है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने भी इस बात की पुष्टि की है कि उनका डिवाइस हैक हो रहा है या उसकी निगरानी हो रही है। ऐसे ही, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता सीताराम येचुरी को भी सोमवार की रात एप्पल से एक ई-मेल मिला। उसमें भी सावधान किया गया है कि श्उनके फोन की श्राज्य-प्रायोजित निगरानीश की जा रही है और उनका फोन और सभी सिस्टम हैक हो रहे हैं।श वैसे कम्पनी द्वारा इस हैकिंग से निपटना मुश्किल बताया गया है। तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा, शिवसेना (उद्धव गुट) की प्रियंका चतुर्वेदी, कांग्रेस के लोकसभा सदस्य शशि थरूर, कांग्रेस पार्टी के मीडिया प्रमुख पवन खेड़ा, आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा, एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी आदि ने भी ऐसी ही चेतावनी मिलने की पुष्टि की है। कुछ लोगों ने स्क्रीनश ट भी शेयर किये हैं जिसके बाद शक की गुंजाईश नहीं रह जाती है कि यह काम केन्द्र सरकार की ओर से ही हो रहा है। अब तक सरकार की ओर से कोई बयान न आना भी उसे शक के घेरे में डालता है। आखिरकार भारत के प्रतिपक्षी नेताओं के फोन टैपिंग में और किस देश की सरकार की रुचि हो सकती है? राहुल गांधी ने इस बात को और स्पष्ट किया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कारोबारी मित्र गौतम अदानी के खिलाफ बोलने के कारण ही उनके फोन को टैप किया जा रहा है। उनकी बात में इसलिये दम दिखता है क्योंकि जितने लोगों को भी निर्माता कम्पनी द्वारा फोन टैपिंग की चेतावनी वाले ईमेल मिले हैं वे न केवल विपक्ष के हैं वरन बेहद मुखर भी हैं और अदानी के विरूद्ध आवाज भी उठाते रहे हैं। उनके द्वारा मोदी सरकार की आलोचना के अंतर्गत अदानी प्रमुख विषय होते ही हैं। अपने फोन की टैपिंग के एलर्ट का संदेश देने वाले ईमेल की प्रति दिखाते हुए राहुल ने यह भी कहा कि देश में मोदी के भी ऊपर अदानी हैं। हालांकि उन्होंने एक बार फिर से इस बात की घोषणा कर दी कि चाहे जो हो जाये, वे अदानी-मोदी के कथित घोटालों को उठाते रहेंगे।

उल्लेखनीय है कि पहले भी भारत सरकार पर यह आरोप लग चुका है कि उसने इजरायल से पैगासस नामक जासूसी उपकरण खरीदा है जिसके जरिये देश के अनेक लोगों के फोन टैप कराये जा रहे हैं। ऐसे में जिन लोगों के नाम सामने आये थे उनमें सिर्फ विपक्षी दल के नेता ही नहीं बल्कि नितिन गडकरी जैसे कुछ उनके अपने मंत्रिमंडल के वरिष्ठ सहयोगी भी थे। उनमें कुछ पत्रकार और यहां तक कि भूतपूर्व न्यायाधीश के नाम भी सामने आये थे। हालांकि उस समय भी सरकार ने इस बात से इंकार किया था कि वह किसी के फोन टैप करा रही है लेकिन उसका खुलासा जिस प्रामाणिक ढंग से हुआ था, उससे शक की कोई गुंजाईश नहीं रह जाती थी। सम्भवतया मामला उठने के बाद उतने ही गुपचुप तरीके से उसका इस्तेमाल रोक भी दिया गया होगा। हालांकि कोई इस बात को दावे के साथ नहीं कह सकता कि वह जासूसी रोक दी गई होगी। जो भी हो, यह एक गम्भीर मसला है और सरकार को चाहिये कि इस बात की गहराई से और पारदर्शितापूर्वक जांच कर इसकी रिपोर्ट जनता के सामने लाए। हालांकि इसकी मोदी सरकार से इसकी उम्मीद करना बेकार है। सम्भव है कि सरकार इस पर मौन धारण कर ले और आतंक फैलाने हेतु यह भ्रम बनाकर रखे कि विपक्षियों के फोन टैप हो रहे हैं।

अपनी ही पार्टी को उसके हाल पर छोड़ चुके हैं मोदी

तीनों राज्यों में बड़ी संख्या में केन्द्रीय मंत्रियों व नेताओं को उतारा गया है जो इन सभी राज्यों में तकलीफदेह साबित हो रहा है। हार या जीत दोनों ही परिस्थितियों में आंतरिक संघर्ष देखने को मिलेंगे, यह भी तय है। इतना ही नहीं, तीनों ही राज्यों में स्थानीय चेहरों व सबसे बड़े नेताओं की उपेक्षा कर मोदी को जो प्रमुख चेहरा बनाया गया है, वह भाजपा के खिलाफ जा सकता है। पांच राज्यों के लिये निर्धारित विधानसभा के चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहे हैं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुनावी मंचों से लम्बी अनुपस्थिति सवाल पैदा कर रही है कि क्या उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को उसके हाल पर छोड़ दिया है। ऐसा इसलिये महसूस होता है क्योंकि जैसी अराजकता व भ्रम चुनावी राज्यों में दिख रहा है वह मोदी के चुनाव संचालन को अपने हाथों में रखे रहने से सम्भव नहीं था। यदि ऐसा है तो इससे पार्टी की मुश्किलों में इजाफा होगा तथा उसे चुनौती देती कांग्रेस और मजबूत होगी। दशक भर यानी जब से भारत के राजनैतिक परि श्य में मोदी एक फिनोमिना बनकर उभरे और छाये हैं, तब से शायद ही कोई ऐसा चुनाव रहा होगा जिसमें उनकी उपस्थिति व दबदबा न रहा हो। अगले महीने की विभिन्न तारीखों में होने जा रहे चुनावों का ऐलान होने के पहले तो मोदी कई राज्यों में सभाएं लेते नजर आये थे, पर अचानक उनकी अनुपस्थिति बहुत साफ महसूस हो रही है। कम से कम पिछले हफ्ते-दस दिनों में उनके द्वारा कोई बड़ी चुनावी रैली या सभा न करने से यह सवाल उठना स्वाभाविक है।

क्या मोदी स्वयं को हटा चुके हैं या भाजपा को संचालित व निर्देशित करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा उन्हें किनारे होने के निर्देश मिले हैं? या उन्हें शीर्ष नेतृत्व द्वारा किसी सोची-समझी रणनीति के अंतर्गत पीएम को चुनावी परि श्य से स्थायी-अस्थायी तौर पर परे किया जा रहा है? कई प्रश्न हैं जो चुनाव को नजदीक से देखने-समझने वाले जानना चाहते हैं। अगर ऐसा है तो आने वाले दिनों के लिये यह बड़ा संकेत है। उन्हें ताबड़तोड़ रैलियां, सभाएं, रोड शो करते हुए देखने का आदी हो चुका यह देश अगर इतने दिनों का भी अंतराल देखे तो उसके लिये यह सोचना बहुत स्वाभाविक है कि क्या मोदी की पकड़ अपनी पार्टी और देश पर से छूट रही है। हालांकि इसका सही जवाब तभी मिल सकेगा जब उन्हें फिर से चुनावी श्यावली का हिस्सा बनते हुए लोग देखेंगे।

सम्भव है कि मोदी चुनावों के ऐन वक्त पर धुंवाधार प्रचार में जुटेंगे। हालांकि कोई मान नहीं सकता कि जो व्यक्ति चुनाव हो या न हो, हर वक्त एक्शन मोड में दिखता हो और सारे साल जिसकी भाषा और ैत्य ऐसे होते हों मानो वह चुनावी रैली को सम्बोधित कर रहा होय तो ऐसे मोदी जी कैसे इतने बड़े अवसर व मंच से खुद को विलग कर सकते हैं? अगर यह कोई सोची-समझी योजना है तो देखना होगा कि उस स्थिति में वे कितने प्रभावी होते हैं और भाजपा को उसका कितना लाभ मिलता है। पहले कई चुनावों में देखा गया है कि आचार संहिता लागू होने या चुनाव प्रचार बंद होने के कुछ मिनट पहले तक मोदी चुनावी सभाओं को सम्बोधित करते रहे हैं। हो सकता है कि इसी तर्ज पर वे अंतिम समय में नमूदार हो बड़े मजमे कर सबको चौंका दें।

मोदी की अनुपस्थिति का एक कारण यह माना जा रहा है कि स्वयं उनकी पार्टी के भीतर धारणा बन चुकी है कि कांग्रेस के आक्रामक चुनाव प्रचार, उसके वादे व गारंटियों तथा उसके जवाबी हमलों के चलते भाजपा को न तो कुछ सूझ रहा है और न ही उसके पास कोई काट है। उनके मुंह से कांग्रेस के कथित भ्रष्टाचार, वंशवाद, उन्हें मिलता १४० करोड़ लोगों का आशीर्वाद, डबल इंजिन सरकारें, विश्व गुरु आदि की बातें सुनते हुए लोग ऊब चुके हैं। इसके विपरीत, विपक्षी गठबन्धन श्इंडियाश का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस के बढ़ते जन समर्थन एवं नैतिक बल के सामने भाजपा पस्त दिखाई दे रही है। जहां एक ओर मोदी अपने चिर-परिचित तरीकों से व कड़े सुरक्षा घेरे में प्रायोजित कार्यक्रमों में अवतरित होते हैं वहीं कांग्रेसी नेता राहुल गांधी एक साधारण व्यक्ति की तरह लोगों एवं जन समुदायों से मिल रहे हैं। इससे जमीनी स्तर पर तैयार हो रहे विमर्श का शासकीय या अशासकीय जवाब भाजपा के पास नहीं है। सम्भवतरू अब मोदी का जनता के सामने जाना कठिन हो गया हो इसलिये उन्होंने प्रचार अभियानों से दूरी बना ली हो। जिन राज्यों में चुनाव होने जा रहे हैं, उनका अगर बारी-बारी से परीक्षण किया जाये तो कुछ कारण साफ हैं जिनके चलते मोदी ने इस समय चुनावी प्रचार से छुट्टी ले ली हो। शायद इन राज्यों में पार्टी के भीतर इस कदर अराजकता व भ्रम है कि मोदी के सामने तीनों ही सवाल हैं कि आखिर वे किस राज्य में जाएं, क्यों जायें और वहां क्या कहेंगे। मिजोरम की बात करें तो वहां के मुख्यमंत्री जोरामथंगा ने कह दिया है वे नरेन्द्र मोदी के साथ मंच साझा नहीं करेंगे। इसका कारण यह है कि मणिपुर के मामले में जैसी चुप्पी मोदी ने साध ली थी और वहां अराजकता होने दी, उसका गहरा असर मिजोरम पर भी पड़ा है। यहां भाजपा के खिलाफ लोगों में रोष है क्योंकि राज्य में बड़ी संख्या में ईसाई समुदाय के लोग रहते हैं। कहने को इस राज्य में सत्तारुढ़ मिजो नेशनल फ्रंट और भाजपा का गठबन्धन है पर वहां एमएनएफ के पास २६ विधायकों के साथ पूर्ण बहुमत है।

सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ असम में विपक्षी एकता की कोशिशें शुरू

अधिकांश अन्य राज्यों की तरह, सीट समायोजन को अंतिम रूप देने पर कांग्रेस और अन्य दलों के बीच असहमति के कारण असम में भी प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी सीट साझा व्यवस्था के बारे में प्रारंभिक बातचीत में देरी से शुरू हुई। जबकि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) जैसी कुछ पार्टियों को लगा कि सीट-बंटवारे की व्यवस्था को जल्द से जल्द अंतिम रूप दिया जाना चाहिए, जिस पर कांग्रेस ने आपत्ति जताई है। असम में कांग्रेस की तुलना में अन्य विपक्षी दलों ने भाजपा-विरोधी एकजुटता हासिल करने के लिए अधिक प्रतिबद्धता दिखाते हुए, २०२४ में लोकसभा चुनावों के लिए अपनी लंबे समय से प्रतीक्षित सीट-बंटवारे की बातचीत शुरू करने के लिए कांग्रेस की रणनीति को नजरअंदाज कर दिया है। हालांकि, दुर्जेय लेकिन अत्यधिक विभाजनकारी मुख्यमंत्री हिमंत विस्वा शर्मा के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ विपक्ष के संयुक्त मोर्चे के लिए स्वयं के स्वार्थ का श्बलिदानश देते हुए एक साथ आने वाली १४ पार्टियों के बीच एक व्यापक समझौते के बावजूद, सीट-बंटवारे पर प्रारंभिक चर्चाओं ने संकेत दिया है कि आगे की राह आसान नहीं होगी। कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्षी दल अगले महीने फिर से मिलने पर सहमत हुए हैं।

अधिकांश राज्यों की तरह, इन वार्ताओं का संचालन सुचारू नहीं था। असम कांग्रेस के नेताओं को सभी १३ लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए ८० संभावित उम्मीदवारों की एक अस्थायी पहली सूची की एकतरफा घोषणा करने के लिए अन्य विपक्षी दलों के गुस्से का सामना करना पड़ा। यह कांग्रेस की ओर से विपक्ष के लिए एक अचूक संकेत था, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा का विरोध करने वाली सबसे बड़ी पार्टी के रूप में, वह सीट समायोजन के लिए अपनी शर्तें निर्धारित करने की हकदार है। अगर विपक्षी दलों के बीच सहमति नहीं बनी तो वह अपने दम पर चुनाव लड़ेगी।

भारत के अधिकांश अन्य राज्यों की तरह, सीट समायोजन को अंतिम रूप देने पर कांग्रेस और अन्य दलों के बीच असहमति के कारण असम में भी प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी सीट साझा व्यवस्था के बारे में प्रारंभिक बातचीत में देरी से शुरू हुई। जबकि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) जैसी कुछ पार्टियों को लगा कि सीट-बंटवारे की व्यवस्था को जल्द से जल्द अंतिम रूप दिया जाना चाहिए, जिस पर कांग्रेस ने आपत्ति जताई है। कांग्रेस को लग रहा है कि पांच राज्यों (पूर्वोत्तर में मिजोरम सहित) में विधानसभा चुनावों के नतीजे आने के बाद ही ऐसी बातचीत अधिक सार्थक ढंग से हो सकेगी। भाजपा कर्नाटक में हार गई थी और हाल के दिनों में अधिकांश उप-चुनावों में उसका प्रदर्शन खराब रहा। लेकिन कांग्रेस ने बड़े पैमाने पर अभियान चलाया और अधिकांश क्षेत्रीय दलों के विपरीत, वह अपनी पकड़ बना रही है। कांग्रेस के अनुसार इन चुनावों में बेहतर प्रदर्शन के साथ, भारत की सबसे पुरानी पार्टी के लिए टीएमसी, आम आदमी पार्टी (आप) और विभिन्न असमिया क्षेत्रीय दलों सहित छोटे समूहों से सीट बंटवारे की मांगों को और अधिक मजबूती से संभालना आसान हो जायेगा। फिर भी, रायसर दल, असम् जातीय परिषद, सीपीआई (एम) और अन्य सहित १३ विपक्षी दलों ने पहले दौर की बातचीत के लिए राज्य कांग्रेस नेताओं से मुलाकात की। गुवाहाटी स्थित मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, आप और टीएमसी दोनों ने संकेत दिया कि वे कम से कम ५ सीटों पर चुनाव लड़ना चाहते हैं। सीपीआई (एम) बारपेटा से चुनाव लड़ना चाहती थी, जो एक ऐसा क्षेत्र है जहां वह मजबूत है। कांग्रेस अध्यक्ष भूपेन बोरा और अन्य नेताओं ने इस समय ऐसे मामलों पर कोई ठोस चर्चा नहीं की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विपक्षी दलों को एक विश्वसनीय वैकल्पिक भाजपा विरोधी राजनीतिक मोर्चा खड़ा करने के लिए अपने समर्थन की मात्रा और पिछले प्रदर्शन के रिक र्ड को ध्यान में रखते हुए अपनी मांगों पर जोर देने के लिए सहमत होना चाहिए।

इस बीच, रिपन बोरा (टीएमसी) को विपक्ष मंच के लिए एक सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम तैयार करने का काम दिया गया। राज्यसभा सदस्य अजीत भुइयां और पूर्व कांग्रेस नेता रकीबुल हुसैन को भाजपा की विभिन्न विफलताओं और कथित तौर पर जनविरोधी नीतियों को सूचीबद्ध करते हुए एक आरोप पत्र का मसौदा तैयार करने का काम सौंपा गया। भाजपा ने अपने तरीके से जवाब दिया, राज्य के मुख्यमंत्री हिमंत विस्वा शर्मा ने अपने पहले के दावे को जोरदार ढंग से दोहराया कि सत्तारूढ़ पार्टी एक या दो को छोड़कर सभी सीटें जीतकर लोकसभा चुनावों में जीत हासिल करेगी। चुनाव की तारीखों की घोषणा से बहुत पहले ही वरिष्ठ भाजपा नेताओं को भरोसा है कि संयुक्त विपक्ष न केवल असफल होगा, बल्कि अपने मतभेदों और झगड़ों के कारण एकजुट भी नहीं रह पायेगा।

विपक्षी सूत्रों ने संकेत दिया कि भाजपा को असम गण परिषद जैसे सहयोगियों के साथ अपनी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, जो कथित तौर पर भाजपा की आक्रामक कार्यप्रणाली के कारण राजनीतिक हाशिये पर चले जाने के खतरे का सामना कर रही है। दोनों पार्टियों के लिए, राजनीतिक समर्थन का मुख्य क्षेत्र असमिया भाषी समुदाय है। हालांकि, अपनी बड़ी राजनीतिक पहुंच, शक्ति और व्यापक अपील के साथ, भाजपा मूलरूप से क्षेत्रीय पार्टी, एजीपी से बहुत आगे है। मतदाता एजीपी की तुलना में भाजपा के फायदे से पूरी तरह वाकिफ हैं।

भाजपा के आलोचकों का कहना है कि उसके आत्मविश्वास का मुख्य कारण हाल ही में आधिकारिक परिसीमन उपायों के माध्यम से असम में विभिन्न विधानसभा और लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों का आधिकारिक पुनर्गठन था। शर्मा सहित पार्टी नेताओं ने खुले तौर पर घोषणा की कि जैसी स्थिति अभी है, मूल असमिया (असमिया भाषी लोग) को विधानसभा की १२६ सीटों में से लगभग ११० सीटों पर चुना जाना चाहिए। केंद्र और राज्य ने यह सुनिश्चित किया था कि असमिया कभी भी असम के भीतर शक्तिहीन अल्पसंख्यक नहीं बनेंगे। एआईयूडीएफ आदि विपक्षी दलों ने नई परिसीमन प्रक्रिया का तीखा विरोध किया था यह आरोप लगाते हुए कि वे कई स्थानीय समुदायों (विशेषकर मुसलमानों) और अन्य समूहों के प्रति भारी पक्षपाती थे। हालांकि, चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट में की गई उनकी अपीलों से बहुत कुछ हासिल नहीं हुआ। अधिकांश नये परिसीमन आदेशों को उनकी आपत्तियों के बावजूद बरकरार रखा गया।

डाक्टर की सलाह- कोरोना का तगड़ा झटका झेला है तो कड़ी मेहनत और कसरत से करें परहेज

गोरखपुर। हृदय रोग विशेषज्ञ डा . कुनाल ने कहा कि कोरोना पीड़ितों में हृदय रोग के मामले बढ़ रहे हैं। सडेन क र्डियक डेथ के मामले भी आ रहे हैं। इसमें कोरोना भी एक पक्ष हो सकता है। कई लोग ऐसे हैं जिन्हें हृदय संबंधी बीमारी बचपन से या जन्मजात होती है। कोरोना संक्रमण लगभग खत्म हो चुका है। लेकिन, उसका दंश अभी तक दर्द दे रहा है। इस महामारी से गंभीर रूप से पीड़ित हुए लोगों के फेफड़े कमजोर हो चुके हैं। कोई अस्थमा की चपेट में है तो किसी को दिल की बीमारी ने घेर लिया है। व्यायाम और बदली दिनचर्या से कम उम्र में लोगों की मौत की खबरों से लोग दहशत में हैं। लोग भ्रमित हैं कि खुद को स्वस्थ रखने के लिए वे नियमित व्यायाम करें या फिर आराम। डाक्टरों की मानें तो ऐसी समस्या से परेशान लोगों के लिए हल्का व्यायाम ही बेहतर है। सप्ताह में सिर्फ चार दिन का व्यायाम ही काफी है।

मेडिकल कालेज के सुपर स्पेशयलिटी ब्लाक स्थित हृदय रोग विभाग में भी ऐसे मरीज पहुंच रहे हैं, जिन्हें कोरोना के बाद दिक्कत आई है। इन मरीजों में ३० से ४० साल की महिलाओं की संख्या अधिक है। युवाओं में अनियमित दिनचर्या भी बीमारी बढ़ने की अहम वजह बन रही है। सहजनवां की ३२ वर्षीया महिला को कोरोना हुआ था। बीमारी तो ठीक हो गई, लेकिन उसे सांस लेने में दिक्कत बनी रही। मेडिकल कालेज में जांच में पता चला कि कोरोना के दौरान फेफड़े में खून जमने से यह परेशानी है। अब वह अस्थमा की मरीज है।

कुशीनगर के ३८ वर्षीय कोरोना संक्रमित युवक अब हृदय रोग से परेशान है। उसके जैसे तमाम नौजवान हैं जो इन दिनों कोरोना के साइड इफेक्ट झेल रहे हैं। हर महीने में मेडिकल कालेज में आठ से १० केस ऐसे आते हैं जो कोरोना पीड़ित थे। अब वह किसी अन्य बीमारी की चपेट में आ चुके हैं। इनमें एक ही बात समान होती है कि फेफड़े की कार्य क्षमता काफी कम हो चुकी है। ऐसे में इन लोगों को श्वसन संबंधी रोग हो रहे हैं। लक्षण के आधार पर सभी का इलाज हो रहा है।

प्रदूषण भी डाल रहा असर

कोरोना पीड़ित लोगों के लिए प्रदूषण भी अधिक खतरा बना हुआ है। जनरल फिजिशियन डा . बीके सुमन बताते हैं कि जिनको श्वसन संबंधी बीमारी है उनके लिए वायु प्रदूषण जानलेवा है। शहर में उड़ रही धूल और धुएं के चलते सबसे अधिक परेशानी उन्हीं लोगों को होगी, जो पहले से ही बीमार हैं। स्वस्थ लोग भी प्रदूषण से बीमार हो सकते हैं। एक अमेरिकी जनरल में इस बात का उल्लेख है कि प्रदूषित हवा में सांस लेने वाले लोगों में हृदय रोग का खतरा अधिक होता है। चेष्ट रोग विशेषज्ञ डा . अश्विनी मिश्रा ने कहा कि कोविड के दौरान कई मरीजों के फेफड़े में खून जम गया था। मरीज तो ठीक हो गए, लेकिन खून के थक्कों की वजह से उनके फेफड़ों की कार्यक्षमता कम हो गई। ऐसे मरीज अगर प्रदूषित वातावरण में जाएंगे या फेफड़े से अधिक कार्य लेने का प्रयास करेंगे तो जीवन पर खतरा हो सकता है। इसलिए अगर कोविड संक्रमित हो चुके हैं तो सेहत का नियमित ध्यान रखें। शरीर को पूरा आराम दें। इसके अलावा ऐसे लोग निमोनिया और इंफ्लुएंजा का टीका जरूर लगवा लें। हृदय रोग विशेषज्ञ डा . कुनाल ने कहा कि कोरोना पीड़ितों में हृदय रोग के मामले बढ़ रहे हैं।

सडेन क र्डियक डेथ के मामले भी आ रहे हैं। इसमें कोरोना भी एक पक्ष हो सकता है। कई लोग ऐसे हैं जिन्हें हृदय संबंधी बीमारी बचपन से या जन्मजात होती है।

जब वे गंभीर रूप से बीमार होते हैं, तब इसका पता चलता है। युवा भी बच्चों व बुजुर्गों की तरह अपने स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें। नियमित जांच से बीमारियों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

ये करें उपाय

प्रदूषण व भीड़ भाड़ वाले इलाके में जाने से बचें।

सप्ताह में चार दिन कुल मिलाकर १५० मिनट व्यायाम करें।

बहुत तेज दौड़ने की बजाय तेज चाल से चलें, पसीना निकलना चाहिए।

जिम में अगर ट्रेनिंग कर रहे हैं तो प्रशिक्षित ट्रेनर का होना बहुत जरूरी है।

संतुलित खान-पान के साथ सोने और उठने के समय का भी ख्याल रखना जरूरी है।

खाने में नमक, तेल व मसाले के प्रयोग को कम करें।

दीपावली के पहले मुश्किल है खोराबार टाउनशिप की ई-लाटरी

रामगढ़ताल में क्रूज के संचालन में भी लगेगा समय

गोरखपुर। गोरखपुर विकास प्राधिकरण (जीडीए) की खोराबार टाउनशिप एवं मेडिसिटी योजना के अंतर्गत विभिन्न संपत्तियों के लिए पंजीकरण कराने वाले लोगों को अभी थोड़ा और इंतजार करना होगा। ई लाटरी की तैयारी तो पूरी हो गई है लेकिन संशोधित ले आउट को रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथारिटी (रेरा) में दाखिल भी करना है। इधर क्रूज के संचालन को लेकर भी कुछ तकनीकी औपचारिकताएं अभी पूरी नहीं हो सकी हैं। जीडीए की ओर से तीन नवंबर को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों ई लाटरी एवं क्रूज के संचालन की शुरूआत कराने की तैयारी की गई थी। दशहरा के अवकाश में भी ई लाटरी की तैयारी की गई। यह तैयारी पूरी भी कर ली गई। इधर ले आउट संशोधन के बाद रेरा में दाखिल किया गया था लेकिन रेरा की ओर से कुछ बिन्दुओं पर स्पष्टीकरण मांगा गया है। जिसका जवाब प्राधिकरण की ओर से तैयार किया जा रहा है। जल्द ही संशोधित ले आउट रेरा में दाखिल कर दिया जाएगा।

तीन नवंबर को गोरखपुर आ रहे मुख्यमंत्री के दो कार्यक्रम लगभग तय हो चुके हैं। क्रूज के संचालन को लेकर कुछ विभागों से अनापत्ति मिलनी शेष है। अनापत्ति मिलने के बाद ही इसका संचालन हो सकेगा। माना जा रहा है कि दीपावली के बाद ही अनापत्ति मिल सकेगी। प्राधिकरण दोनों कार्यक्रम एक साथ कराने की तैयारी में है। इसलिए माना जा रहा है कि यह कार्यक्रम दीपावली के बाद आयोजित होगा।

पांच हजार से अधिक आवेदन

खोराबार टाउनशिप एवं मेडिसिटी योजना में विभिन्न श्रेणी के भूखंडों एवं फ्लैटों के लिए छह हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। आवेदन पत्रों की जांच की जा रही है। पंजीकरण धनराशि के रूप में लोगों ने चार महीने पहले डेढ़ सौ करोड़ रुपये से अधिक जमा किए हैं। देरी के कारण कुछ लोगों की ओर से पंजीकरण धनराशि वापस लेने के लिए आवेदन किया गया है।

क्या कहते हैं अधिकारी

जीडीए उपाध्यक्ष आनन्द वर्द्धन ने कहा कि खोराबार टाउनशिप एवं मेडिसिटी योजना के ई लाटरी की तैयारी पूरी है। क्रूज के संचालन के लिए कुछ विभागों से जल्द ही एनओसी मिल जाएगी। जल्द ही कार्यक्रम आयोजित कर ई लाटरी व क्रूज के संचालन का शुभारंभ कराया जाएगा।

अगले महीने से गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर फर्राटा भरने लगेंगी गाड़ियां, कम समय में पूरा होगा लखनऊ का सफर

गोरखपुर। अगले महीने दिसंबर में गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर अनौपचारिक रूप से संचलन शुरू हो जाएगा। लोगों को कुछ ही स्थानों पर डायवर्जन का सामना करना पड़ेगा। जनवरी २०२४ में सुरक्षा जांच के बाद औपचारिक रुप से इस एक्सप्रेसवे का शुभारंभ हो जाने का दावा किया जा रहा है। लिंक एक्सप्रेसवे का निर्माण कार्य पूरा करने का लक्ष्य मार्च, २०२४ तय है मगर, लोकसभा चुनाव को देखते हुए इसे तय समय से पहले ही शुरू करने की तैयारी है। गोरखपुर के जैतपुर से शुरू होकर आजमगढ़ के सालारपुर के पास पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से मिलने वाले इस लिंक एक्सप्रेसवे पर गोरखपुर की सीमा में कुल पांच टोल प्लाजा पड़ेंगे। इनमें से नौसड़ से सीधे लिंक एक्सप्रेसवे पर आने वालों को सिर्फ एक जगह भगवानपुर में जिरो बाईपास के पास टोल जमा करना पड़ेगा। बाकी के चार टोल प्लाजा, स्थानीय क्षेत्रों को जोड़ने वाले सर्विस लेन पर बने हैं, जहां सिर्फ उसे क्षेत्र से लिंक एक्सप्रेसवे पर आने वाले लोगों को ही टोल जमा करना पड़ेगा। जैसे दूसरा टोल प्लाजा सरैया तिवारीपुर के पास है जहां से कौड़ीराम, बांसगांव आदि क्षेत्रों के लिए रास्ता जाता है। इसी तरह तीसरा टोल प्लाजा हरनही के पास है जहां से खजनी आदि क्षेत्र, चौथा सिकरीगंज के पास और पांचवां बेलघाट के पास है। शहर की ओर से सीधे जाने वालों को इन चारों टोल प्लाजा पर टोल नहीं देना होगा।

यूपी एक्सप्रेसवे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथारिटी (यूपीडा) के मुताबिक अब तक करीब ८० प्रतिशत काम पूरा हो गया है। वर्षा और मिट्टी की वजह से जुलाई और अगस्त में काम थोड़ा प्रभावित रहा, मगर अब इसमें काफी तेजी आ गई है। मिट्टी के अनुबंध समझौते की अनुमानित मात्रा में २५ प्रतिशत की वृद्धि से थोड़ा संकट खड़ा हो गया था। मगर, प्रशासन के प्रयास से यह समस्या भी सुलझ गई है। बस दूरी अधिक होने की वजह से से मिट्टी पहुंचने में थोड़ा ज्यादा समय लग रहा है।

साढ़े तीन घंटे में पूरा होगा लखनऊ का सफर

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे को जोड़ने वाले गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे के निर्माण से लखनऊ की दूरी पांच घंटे की बजाए साढ़े तीन से चार घंटे में पूरी हो जाएगी। हालांकि इस रास्ते लखनऊ की दूरी थोड़ी बढ़ जाएगी मगर कोई अवरोध नहीं होने की वजह से समय कम लगेगा। गोरखपुर से बस्ती, अयोध्या होते हुए लखनऊ की दूरी २७६ किमी है जबकि लिंक एक्सप्रेसवे से दूरी ३११ पड़ेगी। लिंक एक्सप्रेसवे से गोरखपुर और आजमगढ़ के बीच भी आवाजाही आसान और तेज हो जाएगी। साथ ही गोरखपुर से आगरा और दिल्ली की राह भी आसान हो जाएगी। इसके बन जाने से व्यापारियों को भी बहुत फायदा होगा।

घाघरा नदी पर करीब डेढ़ किमी तक ब्रिज का निर्माण पूरा हो गया है। पुल पर रेलिंग आदि के छोटे-छोटे निर्माण का काम बाकी है जो तेजी से चल रहा है। एक्सप्रेसवे पर कुल प्रस्तावित ३४२ स्ट्रक्चर (संरचना) में से करीब ३३५ बनकर तैयार हो चुके हैं।

यह है लिंक एक्सप्रेसवे का रूट

६१.३५ किलोमीटर लंबा यह लिंक एक्सप्रेसवे गोरखपुर के सदर तहसील के जैतपुर गांव से शुरू होकर आजमगढ़ जिले के सालारपुर गांव में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से मिलता है। यह लिंक एक्सप्रेसवे गोरखपुर, संतकबीर नगर, अंबेडकर नगर और आजमगढ़ से होकर गुजर रहा है। इसे वाराणसी के साथ एक अलग लिंक रोड के जरिए जोड़ा जाएगा।

क्या कहते हैं अधिकारी

दिसंबर में गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर संचलन शुरू हो जाएगा। कुछ ही स्थानों पर काम बाकी रह गया है, जहां डायवर्जन किया जाएगा। जनवरी तक यह काम भी पूरा हो जाएगा जिसके बाद औपचारिक रुप से एक्सप्रेसवे पर संचलन प्रारंभ हो जाएगा। निर्माण की नियमित निगरानी व समीक्षा की जा रही है।

औद्योगिक गलियारे के लिए 12 एकड़ जमीन की हुई रजिस्ट्री, इन गांवों की जानी है जमीन

गोरखपुर। सहजनवां तहसील क्षेत्र स्थित गीडा में अब अधिकांश प्लाटों पर फैक्टरियां लग चुकी हैं, या लग रही हैं। इसके बाद अब गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस वे किनारे औद्योगिक गलियारे का विकास किया जा रहा है। प्रथम चरण में ३७० एकड़ जमीन अधिग्रहित कर उसे उद्यमियों को आवंटित किया जा चुका है। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस वे के दोनों तरफ विकसित किए जा रहे औद्योगिक गलियारे के लिए जमीनों की रजिस्ट्री शुरू हो गई है। अब तक ४० किसानों से १२ एकड़ जमीन की रजिस्ट्री हो चुकी है। कुल ३६८ एकड़ जमीन की रजिस्ट्री होनी है। इसके लिए चार गांवों चकभोप, चकफत्ता, बरउर एवं ककना के किसानों की जमीनें ली जानी हैं।

सहजनवां तहसील क्षेत्र स्थित गीडा में अब अधिकांश प्लाटों पर फैक्टरियां लग चुकी हैं, या लग रही हैं। इसके बाद अब गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस वे किनारे औद्योगिक गलियारे का विकास किया जा रहा है। प्रथम चरण में ३७० एकड़ जमीन अधिग्रहित कर उसे उद्यमियों को आवंटित किया जा चुका है। इसके बाद अब ३६८ एकड़ जमीन और अधिग्रहित की जानी है। इसके लिए सहजनवां तहसील प्रशासन ने जमीन की रजिस्ट्री शुरू कर दी है। गीडा सीईओ अनुज मलिक का कहना है कि इन जमीनों का अधिग्रहण कर बड़ी कंपनियों को आवंटित किया जाएगा, जिससे गोरखपुर में औद्योगिक विकास तेजी से हो सके। गोरखपुर में औद्योगिक विकास के लिए मुख्यमंत्री की विशेष पहल का उद्यमियों पर यह असर हो रहा है कि वे अपने नए उद्योग गोरखपुर के औद्योगिक क्षेत्र में लगाने पर ध्यान दे रहे हैं। पेप्सिको और ज्ञान डेयरी को प्ल ट आवंटन के बाद कई और बड़े उद्यमी गोरखपुर में जमीन के लिए प्रशासन से संपर्क कर रहे हैं। पिछले दिनों अडाणी समूह ने भी सीमेंट फैक्टरी के लिए जमीन की डिमांड की थी। करीब १३५०० एकड़ में फैले गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण क्षेत्र में अधिकांश प्लॉट उद्योगों के लिए आवंटित हो चुके हैं। इसके बाद औद्योगिक गलियारा विकसित किया जा रहा है। पेप्सिको और ज्ञान डेयरी प्लांट के बाद कई और बड़ी इकाइयों के भी गोरखपुर आने की संभावना है। इसे देखते हुए ही औद्योगिक गलियारे के विस्तारीकरण के लिए जमीनों का अधिग्रहण किया जा रहा है।

बलिया में बोले सीएम योगी, 1942 में आजादी का एहसास भी देश को बलिया की माटी ने कराया

बलिया। सीएम ने बासडीह के पिंडहरा में आयोजित नारी शक्ति वंदन सम्मेलन में सीएम ने अपना संबोधन दिया। अपने ३५ मिनट के संबोधन में सीएम ने राजनीतिक दल पर टिप्पणी करने से गुरेज किया, लेकिन अपनी सरकार की उपलब्धियों का खूब बखान किया। कहा कि कांग्रेस नहीं चाहती थी कि महिला आरक्षण कानून मूर्त रु ले। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के बलिया में पहुंचे। सीएम ने बासडीह के पिंडहरा में आयोजित नारी शक्ति वंदन सम्मेलन के दौरान जनपद वासियों को १२८.६७ करोड रुपए लागत की परियोजनाओं का उपहार दिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कहा कि बलिया की धरती क्रांति है, चुनौती से अपना रास्ता बनाती है। गुलामी के दौर में आजादी की चिंगारी को सुलगाने का कार्य मंगल पांडे ने किया और देखते देखते पूरे देश में क्रांति की लहर दौड़ गई। इतना ही नहीं सन् १८४२ में आजादी का एहसास भी देश को बलिया की माटी ने कराया था। इतना ही नहीं जब लोकतंत्र खतरे में था तब जयप्रकाश नारायण ने नागरिकों के मौलिक अधिकार की सुरक्षा के लिए संघर्ष किया। जिसमें जिले के सपूत और देश के पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर ने उनका साथ दिया था। मुख्यमंत्री बांसडीह के पिंडहरा में आयोजित नारी शक्ति वंदन सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। अपने ३५ मिनट के संबोधन में सीएम ने राजनीतिक दल पर टिप्पणी करने से गुरेज किया, लेकिन अपनी सरकार की उपलब्धियों का खूब बखान किया। कहा कि कांग्रेस नहीं चाहती थी कि महिला आरक्षण कानून मूर्त रुप ले। इसीलिए उसे लंबे समय से लटकाए रखा था। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ढ़ इच्छा शक्ति के आगे किसी की एक नहीं चली और मजबूरन सबकों इसका समर्थन करना पड़ा। सीएम ने कहा कि आरक्षण से महिलाओं का तेजी से विकास होगा। कहा कि दीपावली पर उज्जवला योजना के कनेक्शनधारियों को मुफ्त सिलेंडर दिया जाएगा। साथ ही बलिया के विकास के लिए गंगा और सरयू नदी में जेटी का का निर्माण कराया जाएगा। ताकि बलिया से अयोध्या सीधे जुड़ सकें।

कल्याण के आदि संपादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी की स्मृति में आज वाराणसी स्थित श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार अन्ध विद्यालय में पूज्य भाई जी अन्नक्षेत्र का शुभारंभ हुआ। श्रद्धेय भाई जी की स्मृतियों को एक नई जीवंतता प्रदान करने हेतु श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार स्मृति सेवा ट्रस्ट को हार्दिक शुभकामनाएं!

सत्ता हाथ में आई तो खड़ा किया करोड़ों का साम्राज्य

जाते ही अपने भी दूर... अंत में जाना पड़ा जेल

रामपुर। आजम खां ने रामपुर में जौहर ट्रस्ट का गठन करने के बाद जौहर यूनिवर्सिटी का निर्माण कराया। जौहर यूनिवर्सिटी का शिलान्यास करने के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव जबकि उद्घाटन के लिए भी तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव रामपुर आए थे। अब योगी सरकार ने उनके ट्रस्ट को दी गई जमीन वापस ले ली है। इससे उनकी मुसीबत और बढ़ गई है। सपा नेता आजम खां के दशकों में खड़ा किया गया करोड़ों का साम्राज्य २०१७ में उनकी सत्ता जाते ही बिखरने लगा। पहले जौहर यूनिवर्सिटी की जमीन हाथ से गई और फिर धीरे-धीरे जौहर शोध संस्थान का भवन भी हाथ से चला गया। इतना ही नहीं उनके परिवार को जेल की सलाखों के पीछे भी जाना पड़ा।

अब माध्यमिक शिक्षा विभाग की जमीन पर बने सपा कार्यालय और रामपुर पब्लिक स्कूल (आरपीएस) से भी हाथ धोना पड़ेगा। संकट के बादल उनके यतीमखाना बस्ती में निर्माणाधीन आरपीएस की तीसरी शाखा पर भी हैं। उनका हमसफर रिजार्ट भी विवादों में घिरता रहा है। १० बार विधायक, एक-एक बार लोकसभा और राज्यसभा सांसद, चार बार कैबिनेट मंत्री रह चुके सपा नेता आजम खां की मुश्किलें २०१७ में सत्ता जाते ही शुरू हो गई थीं। सपा सरकार में यूपी के मिनी मुख्यमंत्री के रूप में जाने वाले सपा नेता आजम खां ने करोड़ों रुपये का साम्राज्य खड़ा किया था।

इस दौरान उन्होंने रामपुर में जौहर ट्रस्ट का गठन करने के बाद जौहर यूनिवर्सिटी का निर्माण कराया। जौहर यूनिवर्सिटी का शिलान्यास करने के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव आए थे, जबकि उद्घाटन के लिए भी तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव रामपुर आए थे। उनके साथ पूरी कैबिनेट भी रामपुर में रही थी। २०१२ से २१०७ के बीच की सरकार में सपा नेता आजम खां का काफी जलवा रहा था। उन्होंने रामपुर में जौहर शोध संस्थान बनवाया और उसको रामपुर पब्लिक स्कूल के लिए लीज पर ले लिया। इसका किराया भी महज सौ रुपये रखा गया था।

इसके अलावा शिक्षा विभाग की जमीन को भी लीज पर लिया और फिर यहां पर रामपुर पब्लिक स्कूल (गर्ल्स विंग्स) स्थापित कराया। साथ ही सपा का कार्यालय भी खोल लिया। इसके अलावा यतीमखाना बस्ती को खाली कराते हुए यहां पर आरपीएस की तीसरी शाखा खोलने की योजना बनाई। इसी तरह पान दरीबा में भी आरपीएस की एक शाखा को खुलवाया। आजम खां ने सत्ता का दुरुपयोग करते हुए करोड़ों रुपये का साम्राज्य स्थापित किया। मगर, सरकार जाते ही उनके लिए मुसीबत खड़ी होनी लगी। २०१६ लोकसभा चुनाव के दौरान ही गलत बयानबाजी के चलते उन पर दर्जनों मुकदमे दर्ज हुए।

उनके खिलाफ कानूनी शिकंजा और उनको सवा दो साल जेल में भी रहना पड़ा। इस बीच उनके पास जौहर यूनिवर्सिटी की जमीन महज १२.५० एकड़ ही रह गई। शेष जमीन सरकारी हो गई। इसके अलावा जौहर शोध संस्थान में चल रहा स्कूल भवन भी उनसे छिन गया। स्वार रोड पर स्थित यतीमखाना बस्ती में निर्माणाधीन आरपीएस की तीसरी शाखा भी विवादों के घेरे में है और मामला हाईकोर्ट में विचाराधीन है। अब रामपुर पब्लिक स्कूल और सपा कार्यालय की जमीन भी चली गई। कुल मिलाकर बीते छह साल में आजम का साम्राज्य धीरे-धीरे बिखरता जा रहा है। इस समय आजम खां सीतापुर जेल में बंद हैं। जबकि उनके बेटे अब्दुल्ला हरदोई जेल और उनकी पत्नी तजीन फात्मा सीतापुर जेल में बंद हैं। सभी को अब्दुल्ला आजम के दो जन्म प्रमाणपत्र बनवाने के मामले में सजा हुई है।

381 करोड़ हुए खर्च फिर भी व्यवस्थाएं राम भरोसे

राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में त्रिफला चूर्ण से हो रहा मरीजों का इलाज

गाजियाबाद। प्राचीन यूनानी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए कमला नेहरू नगर में १० एकड़ जमीन पर ३८१.४२ करोड़ की लागत से बनाए गए राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में एक साल बाद भी सुविधाओं का अभाव है। मसाज सेंटर संचालन को नियुक्त किए गए चार मसाजर ओपीडी काउंटर पर मरीजों की पर्ची बनाने का काम कर रहे हैं। कपिंग थेरेपी का वार्ड बनाया गया है, लेकिन बंद पड़ा है। २०० बेड का इंतजाम हैं लेकिन एक भी मरीज भर्ती नहीं किया गया है। कोई जांच नहीं होती है। परास्नातक और पीएचडी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मेडिकल कालेज भी बनाया गया है, लेकिन पढ़ाई शुरू नहीं हुई है।

मरीजों को दिया जा रहा है त्रिफला चूर्णा

ओपीडी में त्रिफला चूर्ण से लेकर कफ सिरप देकर मरीजों को जरूर ठीक किया जा रहा है। भर्ती करने का पूरा इंतजाम हैं, लेकिन चिकित्सक नहीं है। संविदा पर रखे गए छह चिकित्सकों में से कई बाहर की दवाएं लिखकर यूनानी चिकित्सा का झंडा बुलंद कर रहे हैं। उद्घाटन से शुरू हुई राजनीतिक रार के साथ ही यहां तैनात स्वास्थ्यकर्मियों में दो गुट बन गए हैं। तीन महीने पहले संस्थान की रार पुलिस थाने तक पहुंच गई थी। एमआरआइ सेंटर शुरू नहीं हुआ है।

पिछले साल हुआ था ओपीडी का उद्घाटन

ओपीडी एक नवंबर को शुरू करने के बाद इसका उद्घाटन ११ दिसंबर २०२२ को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल किया था। संस्थान में मुख्य रूप से गठिया, सफेद दाग, एग्जिमा, अस्थमा, माइग्रेन, मलेरिया एवं फाइलेरिया, पेट की समस्या और हड्डी रोगों का इलाज हो रहा है। एक नवंबर २०२२ से लेकर ३१ अक्टूबर २०२३ तक इस संस्थान में गाजियाबाद के अलावा फरीदाबाद, मेरठ, बुलंदशहर, मुरादाबाद और गुरुग्राम तक के कुल २.२२ लाख मरीजों ने पहुंचकर इलाज कराया है। नवंबर २०२२ में जहां १५ हजार मरीजों ने ओपीडी में पंजीकरण कराया वहीं पर अक्टूबर २०२३ में २१६४६ मरीज इलाज कराने पहुंचे। भवन का ७० प्रतिशत हिस्सा ही निर्माण कंपनी वैपकास ने आयुष विभाग को हैंडओवर किया है।

संविदा पर रखे गए हैं छह चिकित्सक मरीजों की तुलना में कम है संख्या

मरीजों को भर्ती करने की सेवाओं का नहीं हुआ संचालन
कपिंग थेरेपी और मसाज सेंटर की फाइल दिल्ली में अटकी
राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में व्यवस्थाएं राम भरोसे
वर्तमान में संविदा पर छह चिकित्सकों समेत ३८ स्वास्थ्यकर्मी तैनात है, जो संस्थान की ओपीडी के सापेक्ष कम है। स्थायी चिकित्सकों की नियुक्ति प्रक्रिया चल रही है। मरीजों को भर्ती करने का निर्णय मंत्रालय स्तर से होगा। भवन का ७० प्रतिशत हिस्सा निर्माण कंपनी ने हैंडओवर कर दिया है। मरीजों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लगातार प्रयास जारी हैं।- मोहम्मद जुल्फिक्फल,ओएसडी राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान

बलिया

अभिभावक के रूप में दिखी बलिया पुलिस
पिता के रोल मे दिखे गडवार इंस्पेक्टर संजय शुक्ला
4 बच्चों के लिए गर्म कपड़े, खाद्य सामग्री लेकर पहुंचे घर
अनाथ मासूम बच्चों के पिता की हुई थी हत्या
चारों बच्चों को पढ़ाने का SHO ने लिया जिम्मा
गडवार के सिकरिया खुर्द गांव के हैं मासूम बच्चे

पूर्वांचल की सबसे बड़ी महेवा मंडी को मिली एक करोड़ 63 लाख का नोटिस, भड़के के व्यापारियों की अधिकारी से हुई नोकझोंक

गोरखपुर। महेवा मंडी के व्यापारियों को नगर निगम ने एक करोड़ ६३ लाख ५६ हजार ६८६ रुपये का बकाया नोटिस दिया है। मंडी में २०८ दुकानदार हैं। नोटिस मिलने के बाद व्यापारियों में गुस्सा है। मंगलवार को समाधान दिवस में नोटिस के खिलाफ ज्ञापन देने पहुंचे व्यापारियों की मुख्य कर निर्धारण अधिकारी (एमकेएनए) विनय राय से नोकझोंक हो गई। व्यापारियों ने नोटिस वापस लेने की मांग की। एमकेएनए ने कहा कि व्यापारियों को कर देना होगा। अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह ने मामले को संभाला और जांच का आश्वासन देकर व्यापारियों को वापस किया। पूर्वांचल की सबसे बड़ी नवीन मंडी महेवा में सब्जी, फल, गल्ला, किराना, मछली आदि की दुकानें हैं। यहां की पूरी व्यवस्था की जिम्मेदारी मंडी समिति की है। २५ अक्टूबर को नगर निगम ने मंडी के व्यापारियों को मांग नोटिस जारी किया है। ज्यादातर व्यापारियों पर सितंबर २०२३ का बकाया एक लाख ८३ हजार १७० रुपये बताया गया है। सोमवार से व्यापारियों को नोटिस मिलना शुरू हुआ।

भरोसे का कत्ल- जिसे सात साल पढ़ाया..

.उसी की प्रेमी के साथ मिलकर कर दी हत्या, रैकी करने के बाद रची थी साजिश

कानपुर। मनीष कनौडिया के चाचा ने बताया कि रचिता पिछले १० साल से मनीष के परिवार के संपर्क में थी। वह पहले कुशाग्र को ट्यूशन पढ़ाती थी, लेकिन वर्ष २०१८ में कुशाग्र के माता-पिता द्वारा उसको पढ़ाना बंद करवा दिया गया था। इसके बाद वह एक साल पहले तक वह कुशाग्र के छोटे भाई आदि को घर आकर ट्यूशन पढ़ाती रही थी। इसे क्रोध का इंतहा कह लीजिए या भरोसे का कत्ल। जिस रचिता को अपने परिवार का हिस्सा बनाया। एक गार्जियन की तरह सात साल तक पढ़ाया। हर सुख दुख में साथ दिया। उसी ने अपने प्रेमी प्रभात के साथ मिलकर बेटे को मौत के घाट उतारने की पूरी साजिश भी रची। कुशाग्र की हत्या के खुलासे पर कुशाग्र के परिजनों के साथ इलाकाई लोग भी हैरान रह गए। कुशाग्र हत्याकांड के खुलासा हुआ, तो हर किसी का कलेजा कांप गया।

पूछताछ में पता चला कि कुशाग्र रचिता और उसके प्रेमी प्रभात से जिंदगी की भीख मांगता रहा पर दोनों को उस मासूम पर तरस नहीं आया। उन्होंने बेरहमी से नारियल की रस्सी से उसका गला घोंटकर हत्या कर दिया। इसके बाद उसके साथ पैर भी उसी रस्सी से बांधकर एक कमरे में फेंक दिया। रायपुरवा के आर्चायनगर स्थित श्री भगवती विला अपार्टमेंट निवासी मनीष कनौडिया शहर के बडे कपड़ा कारोबारी हैं।

सूरत में भी कपड़े का बड़ा कारोबार है

उनका पीरोड में कनोडिया मैचिंग, जनरलगंज में मां शितला एजेंसी, लखनऊ में श्री राधे ष्ण साड़िस व मनीष कुमार सुमीत कुमार एंड संस के नाम से फर्म है। इस फर्म के जरिए वह कपड़े का कारोबार करते हैं। इनका गुजरात के सूरत में भी कपड़े का बड़ा कारोबार है। इसके चलते वह ज्यादा समय सूरत में ही रहते हैं। वहीं, लखनऊ का व्यापार उनके छोटे भाई सुमीत कनौडिया संभालते हैं। मनीष के परिवार में पत्नी सोनिया, दो बेटे कुशाग्र (१६), आदी (१३) व छह माह की बेटी आरू है।

10 साल से मनीष के परिवार के संपर्क में थी रचिता

मनीष कनौडिया के चाचा ने बताया कि रचिता पिछले १० साल से मनीष के परिवार के संपर्क में थी। वह पहले कुशाग्र को ट्यूशन पढ़ाती थी, लेकिन वर्ष २०१८ में कुशाग्र के माता-पिता द्वारा उसको पढ़ाना बंद करवा दिया गया था। इसके बाद वह एक साल पहले तक वह कुशाग्र के छोटे भाई आदि को घर आकर ट्यूशन पढ़ाती रही थी। इसके बाद से पढ़ाना बंद कर दिया था। इसके बाद भी लगाव के चलते अक्सर घर आना जाना लगा रहता था।

शादी का खर्च तक उठाने को तैयार थे कुशाग्र के पिता

चाचा संजय कनौडिया ने बताया कि रचिता मूलरूप से हिमाचल प्रदेश के अंब नंदपुर की रहने वाली है। माता-पिता की मौत के बाद वह फजलगंज में किराये के मकान में रहकर बच्चों ट्यूशन पढ़ाती थी। उसकी अर्थिक स्थित खराब देख मनीष और उसका परिवार उसे हर तहर की मदद करता था। यहां तक की मनीष की पत्नी ने रचिता से शादी तक का उसका खर्च उठाने का वादा किया था। लेकिन रचिता ने पूरे परिवार को विश्वास तोड़ दिया।

13 अक्तूबर को कुशाग्र के जन्मदिन बधाई के बहाने गई थी रैकी करने

परिजनों ने बताया कि १३ अक्तूबर को कुशाग्र का जन्मदिन था। जन्मदिन पार्टी में रचिता अपने प्रेमी प्रभात के साथ उनके घर पहुंची थी। जहां दोनों ने उसे बर्थडे की बधाई देने के साथ ही गिफ्ट भी दिए थे। उस दौरान रचिता ने कुशाग्र से प्रभात की दोस्ती भी करा दी थी। पूछताछ में प्रभात ने बताया कि वह बर्थडे पार्टी के बहाने रैकी करने गए हुआ था। इसके साथ ही उसके आने जाने तक समय भी पता लगा लिया था। इसके बाद उसके हत्या की योजना बनाई।

हत्यारोपियों में एक होमगार्ड का बेटा, तो दूसरा हैलट इमरजेंसी कैंटिन का कर्मचारी

पकड़े गए हत्यारोपियों ने मुख्य आरोपी प्रभात शुक्ला पनकी थाने में तैनात होमगार्ड सुनील शुक्ला का बेटा है। डीएवी से बीएससी की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह लौंग और इलाइची का होलसेल काम करता था, लेकिन पिछले दो साल से वह कुछ नहीं करता है। वहीं उसका साथी शिवा हैलट क इमरजेंसी कैंटिन में कर्मचारी है। जिसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। शिवा ने पुलिस को बताया कि वह रुपये की लालच में प्रभात की बातों में आ गया। इसके बाद उसने फिरौती का पत्र कारोबारी को घर पहुंचा दिया।

ऐसे किया गया खुलासा

कुशाग्र सोमवार शाम करीब ४:३० बजे कोचिंग सेंटर के लिए स्कूटी से निकला था। इसके बाद से लापता हो गया था। परिजन जब उसकी खोजबीन कर रहे थे तभी स्कूटी सवार एक युवक घर में एक पत्र फेंका। इसमें ३० लाख रुपये फिरौती की मांगी गई थी। फिरौती का पत्र इस तरह से लिखा गया था कि संदेह एक विशेष समुदाय के सदस्य पर जाए। परिजनों को अलकायदा के नाम से मिले लेटर में अपहरण की बात कही गई थी। इसके बाद पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। इस बीच अपार्टमेंट के गार्ड राजन ने एक स्कूटी का नंबर बताया, जिससे पुलिस की जांच को एक नई दिशा मिल गई। इसके बाद मुख्य आरोपी प्रभात शुक्ला और उसकी ट्यूशन टीचर तक पहुंच गई।

ऐसे हुई थी कुशाग्र की हत्या

मुख्य आरोपी ने पूछताछ में बताया कि उसकी प्रेमिका रचिता वत्स पिछले १० साल से कुशाग्र को ट्यूशन पढ़ाती थी। पिछले डेढ़ साल से वह अक्सर कुशाग्र के घर जाती थी। ऐसे में वह रचिता पर शक करता था कि उसका कुशाग्र की बीच कुछ संबंध हैं उसे गवारा नहीं थे। इसके चलते उसने उसने अपने मित्र शिवा और रचिता वत्स के साथ मिलकर कुशाग्र को मारने की योजना बनाई थी।

योजना के तहत उसने सोमवार को कोचिंग जाते वक्त कुशाग्र को रोक लिया। इसके बाद अपने पास कोई साधन न होने का बहाना बनाते हुए उसे उसके घर ओमनगर तक छोड़ने के लिए कहा। इसके बाद कुशाग्र उसके अपने स्कूटी से उसे घर ले गया। वहां हाते के गेट पर पहुंचते ही प्रभात ने कुशाग्र को कोल्ड ड्रिंक पीने के लिए घर के बगल स्थित खाली कमरे में ले गया। योजना के तहत रस्सी से गला कसकर कुशाग्र की हत्या कर दी।

कर्पूरी ठाकुर के जरिये पूर्वी यूपी व बिहार पर अखिलेश का फोकस

गोरखपुर। जननायक कर्पूरी ठाकुर के जरिये समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव की नजर पूर्वी उत्तर प्रदेश के साथ ही बिहार के अति पिछड़ा वर्ग पर भी है। कर्पूरी ठाकुर के नाम से चार नवंबर को गोरखपुर के भीटी रावत में आयोजित जननायक कर्पूरी ठाकुर सामाजिक न्याय महारैली को अखिलेश संबोधित करेंगे। नाई महासभा की ओर से यूपी में प्रस्तावित चार महारैली की शुरुआत गोरखपुर से ही किए जाने के यह सियासी मायने निकाले जा रहे हैं कि सपा इसके जरिए पूर्वी उत्तर प्रदेश के साथ ही गोरखपुर से सटे बिहार के जिलों के अति पिछड़ों को भी साधना चाहती है। गोरखपुर में लंबे समय बाद यह पहला मौका है जब अखिलेश किसी समाज विशेष के कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं।

लोकसभा चुनाव को लेकर बिहार में भी विस्तार कर रहे सपा मुखिया

आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर अखिलेश, पार्टी का बिहार में भी विस्तार कर रहे हैं। उनकी नजर हर वर्ग पर है। ऐसे में इस महारैली की गूंज बिहार में भी सुनाई पड़े इसलिए महारैली में नाई समाज की बड़ी संख्या में भागीदारी दर्ज कराने के लिए जोरदार तैयारी की जा रही है। पार्टी नेताओं के साथ खुद राष्ट्रीय नाई महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राम भवन शर्मा और अन्य पदाधिकारी तैयारी की नियमित निगरानी कर रहे हैं। महासभा की ओर से गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, देवीपाटन और अयोध्या मंडल में २५० से अधिक बसें तैनात करने का दावा किया जा रहा है, जिसके जरिये हर विधानसभा से बड़ी संख्या में नाई समाज के लोग महारैली में लाए जाएंगे। नाई समाज का एक बड़ा तबका भाजपा से भी जुड़ा है। इस महारैली के जरिए अखिलेश यादव की उनमें भी यह संदेश देने की कोशिश रहेगी कि सपा, उनके समाज की सच्ची हितैषी और शुभचिंतक है। नाई महासभा के प्रदेश अध्यक्ष के मुताबिक गोरखपुर के बाद अगले तीन वर्षों में नाई महासभा की महारैली चरणवार आगरा, मेरठ, प्रयागराज और फिर आखिरी में लखनऊ के रमाबाई पार्क में प्रस्तावित है।

गोरखपुर में दो घंटे रहेंगे अखिलेश

चार नवंबर को सहजनवां के भीटी रावत स्थित शारदा प्रसाद रावत महाविद्यालय परिसर में आयोजित होने वाली जननायक कर्पूरी ठाकुर सामाजिक न्याय महारैली में शामिल होने आ रहे सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष दो घंटे तक गोरखपुर में रहेंगे। वह चार्टड प्लेन से १०:५० बजे गोरखपुर एयरपोर्ट पहुंचेंगे। वहां से सड़क मार्ग से ११:३० बजे कार्यक्रम स्थल पहुंचेंगे। रैली को संबोधित करने के बाद १२:१५ बजे वहां से एयरपोर्ट निकल जाएंगे और फिर एक बजे लखनऊ के लिए प्रस्थान कर जाएंगे।

क्या कहते हैं पदाधिकारी

भाजपा शासन में अति पिछड़ा वर्ग ठगा गया है। नाई समाज अब यह अच्छी तरह से समझ चुका है और पूरी तरह से समाजवादी पार्टी के साथ है। आगामी लोकसभा और फिर २०२७ के यूपी विधानसभा चुनाव में हमारा समाज, अखिलेश के नेतृत्व वाली सरकार बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा। महारैली की सफलता के लिए गोरखपुर, बस्ती, देवीपाटन, आजमगढ़ और अयोध्या मंडल के सभी जिलों के प्रत्येक विधानसभाओं से नाई समाज के लोग रैली में जुटेंगे। इसके लिए ढाई सौ से अधिक वाहनों की व्यवस्था की गई है।

- राम भवन शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय नाई महासभा

महारैली की तैयारी पूरी हो गई है। पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं के साथ ही पूरे नाई समाज में इस रैली को लेकर उत्साह है। बड़ी संख्या में समाज के लोग इस रैली में शामिल होंगे।

यूपी के इस जिले में 74.66 करोड़ की लागत से बनेंगी 25 सड़कें

यूपी के इस जिले में 74.66 करोड़ की लागत से बनेंगी 25 सड़कें

प्रयागराज। महाकुंभ के पहले नगर निगम मुख्यमंत्री ग्रीन रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलप स्कीम (अर्बन)– सीएम ग्रिड योजना के तहत शहर की 25 सड़कों को संवारा जाएगा। योजना के तहत इन सड़कों के सुंदरीकरण और चौड़ीकरण के लिए 74.66 करोड़ रुपये का बजट खर्च किया जाएगा।शासन की ओर से बजट आवंटित किया जा चुका है। नगर निगम की ओर से 25 सड़कों की सूची शासन को भेज दी गई है। इन सड़कों पर 32635 मीटर दूरी तक सुंदरीकरण करने के साथ ही चौड़ीकरण का कार्य भी किया जाएगा। इन सड़कों पर डिवाइडर बनेंगे। छायादार और शोभादार पौधे लगाए जाएंगे। इसके अलावा जर्जर हो चुकी सड़कों को भी दुरुस्त किया जाएगा।

इन सड़कों का होगा सुंदरी एवं चौड़ीकरण

सुल्तानपुर भावा में पहलवान चौराहा से लेबर चौराहा होते हुए करामत चौकी मार्ग।
प्रीतम नगर में केंद्रांचल गेट से लेकर विवेकानंद चौराहा होते हुए आरके टावर तक।
ट्रांसपोर्ट नगर में धर्मवीर मूर्ति से लेकर आरटीओ चौराहा तक।
ट्रांसपोट नगर में श्री नमो नारायण के घर के सामने से गरीब दास चौराहा तक।
प्रीतम नगर जीटी रोड थाना से दुर्गा पूजा पार्क तक।
शांतिपुर में प्राची हास्पिटल से लेबर चौराहा गोहरी क्रासिंग तक।
लवायन इंडस्ट्रीयल एरिया से मीरजापुर रोड से जक्शन तक।
झूंसी कोहना से पुलिस चौकी जीटी रोड तक।
इंडियन प्रेस चौराहा से डायमंड जुबली हास्टल तक।
कनिहार में जीटी रोड से त्रिवेणी पुरम रोड तक।
केपी इंटर कालेज के सामने से जगत तारण गोल्डेन जुबली स्कूल होते हुए जवाहर लाल नेहरू रोड।
कृति स्कैनिंग सेंटर से होते हुए चंद्रपाली क्लीनिक होते हुए सीएमपी डिग्री कालेज के पीछे तक।
नेतराम चौराहा से लखनऊ रोड तक।
अतरसुइया गोलपार्क से पजावा पावर हाउस तक।
करेली आवास विकास योजना में सी ब्लाक,डी ब्लाक की सड़क।
म्योहाल चौराहा से मनमोहन पार्क तक की सड़क।
शांतिपुरम में काशीराम आवास योजना से आई हास्पिटल तक।
आईआईटी चौराहा से ला युनिवर्सिटी होते हुए कसारी– मसारी तक।
लूकरगंज जीटी रोड से खुसरोबाग बाउंड्री तक।
मधवापुर से परेड मैदान तक।
लूकरगंज मछली तिराहा से पुलिस चौकी होते हुए घनश्याम नगर तक।
कटरा जहाज चौराहा से कचहरी होते हुए लक्ष्मी टाकिज चौराहा तक।

33.84 करोड़ रुपये में बेहतर करेंगे जलापूर्ति।

फ्लाईओवर की सर्विस रोड को 23 करोड़ मंजूर

इलाहाबाद हाई कोर्ट के सामने फ्लाईओवर की सर्विस रोड के चौड़ीकरण के लिए गुरुवार को शासन से 23 करोड़ 30 लाख रुपये की वित्तीय व प्रशासकीय स्वीकृति मिल गई। इसमें 11 करोड़ 65 लाख रुपये जारी भी कर दिए गए। यहां दोनों सर्विस रोड को तीन लेन रोड में परिवर्तित कराया जाएगा।

सात से 30 नवंबर तक लगा एग्जिट पोल पर पूर्ण प्रतिबंध, निर्वाचन आयोग ने जारी की अधिसूचना

जयपुर। भारत चुनाव आयोग ने मध्यप्रदेश, राजस्थान, छतीसगढ़ समेत पांच राज्यों में सात नवंबर से होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर मंगलवार को बड़ा फैसला लिया।

चुनाव आयोग ने इन राज्यों में होने वाले चुनाव को लेकर सात से ३० नवंबर तक एक्जिट पोल पर प्रतिबंध लगा दिया है। भारत निर्वाचन आयोग ने सात नवंबर को सुबह सात बजे से लेकर ३० नवंबर की शाम ६.३० बजे तक के लिए एक्जिट पोल पर रोक लगा दी है। इस दौरान राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, मिजोरम, तेलंगाना और नगालैंड के तापी विधानसभा क्षेत्र में एक्जिट पोल का प्रकाशन और प्रसारण प्रतिबंधित रहेगा।

भारत निर्वाचन आयोग से मिले निर्देशों के अनुसार, राजस्थान सहित अन्य चुनाव वाले राज्यों में मतदान से ४८ घंटे पूर्व ओपिनियन पोल या अन्य पोल सर्वे के प्रसारण पर प्रतिबंध रहेगा।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि अधिसूचना के अनुसार, एग्जिट पोल करना और एग्जिट पोल के परिणामों को समाचार पत्रों में प्रकाशित या इलेक्ट्र निक मीडिया के माध्यम से प्रसारित करना अथवा अन्य किसी तरीके से प्रचार-प्रसार करने पर भी पूर्णतया प्रतिबंध रहेगा।

उन्होंने बताया कि इलेक्ट्र निक मीडिया में किसी ओपिनियन पोल या किसी अन्य प्रकार के मतदान सर्वेक्षण के परिणामों सहित किसी भी निर्वाचन मामले का प्रदर्शन ४८ घंटों की अवधि जो इन चुनावों के संबंध में मतदान के समापन के लिए नियत घंटों के साथ समाप्त हुई हो, तक के लिए रोक रहेगी।

भारत निर्वाचन आयोग ने जनप्रतिनिधि कानून १९५१ की धारा १२६ ए की उपधारा (१) के तहत अपनी शक्ति का इस्तेमाल करते हुए यह अधिसूचित किया है कि सात नवंबर २०२३ को सुबह सात बजे से लेकर ३० नवंबर २०२३ को शाम ६.३० बजे तक किसी भी प्रकार के एग्जिट पोल को इलेक्ट्र निक या प्रिंट मीडिया के जरिए या अन्य तरीके से प्रसारित करने पर रोक होगी।

658 रुपये की साइकिल, 12 कार, 129 अन्य वाहन

इंदौर। भाजपा राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने अपने शपथ पत्र में कुल ८.६२ करोड़ रुपये की संपत्ति बताई है। कांग्रेस प्रत्याशी संजय शुक्ला ने अपने हलफनामे में कुल २१७ करोड़ रुपये की संपत्ति बताई है। २०१८ के चुनाव में शुक्ला ने कुल १३९ करोड़ की संपत्ति बताई थी। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन भरने की प्रक्रिया पूरी हो गई है। इसके लिए कई बड़े चेहरों ने भी अपनी-अपनी सीटों से नामांकन दाखिल कर दिया। कई ऐसी भी सीटें हैं जहां उतरे प्रत्याशियों की चर्चा हो रही है। उन चर्चित सीटों में इंदौर-१ विधानसभा सीट है। यह सीट प्रदेश की सबसे ह ट सीट में गिनी जा रही है। यहां से भाजपा की तरफ से पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय मैदान में हैं। वहीं, कांग्रेस की तरफ से मौजूदा विधायक संजय शुक्ला ने पर्चा भरा है। शुक्ला प्रदेश के सबसे अमीर विधायकों में शामिल हैं। चुनावी हलफनामे के अनुसार, भाजपा नेता विजयवर्गीय १४.६१ करोड़ रुपये की संपत्ति के मालिक हैं। भाजपा नेता के नाम पर कोई भी वाहन नहीं है। वहीं २१७ करोड़ रुपये की संपत्ति के मालिक कांग्रेस विधायक संजय शुक्ला १४२ वाहन हैं। दोनों नेताओं के शपथ पत्र से कई खास जानकारियां सामने आई हैं। आइये इन सभी के बारे में जानते हैं...

पांच साल में बढ़ी या घटी संपत्ति ?

भाजपा राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने अपने शपथ पत्र में कुल १४.६१ करोड़ रुपये की संपत्ति बताई है। २०१८ के चुनाव में कैलाश के बेटे आकाश चुनाव लड़े थे। २०१३ में कैलाश विजयवर्गीय ने इस सीट से चुनाव लड़ा था। २०१३ के चुनाव में उनकी संपत्ति २.५५ करोड़ रुपये थी।

इस तरह से बीते १० साल में उनकी संपत्ति में पांच गुने से भी ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, कांग्रेस प्रत्याशी संजय शुक्ला की बात करें तो उन्होंने अपने हलफनामे में कुल २१७.४१ करोड़ रुपये की संपत्ति बताई है। २०१८ के चुनाव में संजय ने कुल १३९ करोड़ रुपये की कुल संपत्ति बताई थी। बीते पांच साल में उनकी संपत्ति में ७८ करोड़ से भी ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है।

तीन सबसे अमीर विधायकों में शामिल हैं संजय शुक्ला

कांग्रेस उम्मीदवार संजय शुक्ला राज्य के सबसे अमीर मौजूदा विधायकों में तीसरे नंबर पर हैं। २०१८ के चुनावी हलफनामे में उन्होंने अपनी कुल संपत्ति १३६ करोड़ रुपये बताई थी। उस समय उनसे ज्यादा संपत्ति केवल कटनी की विजयराघवगढ़ सीट से भाजपा विधायक संजय पाठक और रतलाम शहर सीट से भाजपा विधायक चौतन्य कश्यप की थी। पाठक ने २०१८ में कुल २२६ करोड़ की संपत्ति बताई थी। वहीं, चौतन्य कश्यप के पास २०१८ में २०४ करोड़ की संपत्ति थी।

संजय की साल-दर-साल कमाई करोड़ों में

कमाई की बात करें तो २०१८-१९ में भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय की कुल कमाई ९.४३ लाख रुपये थी। अगले वित्त वर्ष में उनकी कमाई में बढ़ोतरी हुई। २०१९-२० में ये बढ़कर १०.५२ लाख रुपये हो गई। २०२०-२१ में कैलाश विजयवर्गीय की कमाई में मामूली कमी आई और ये ९.८१ लाख रुपये ही रह गई। वहीं, २०२१-२२ में भाजपा नेता की कमाई में एक बार फिर कमी हुई और ये घटकर ८.९१ लाख रुपये हो गई। २०२२-२३ में इसमें लगातार तीसरी बार कमी हुई और ये ८.२५ लाख रुपये रही। उधर कांग्रेस प्रत्याशी संजय शुक्ला की कमाई देखें तो २०१८-१९ में उनकी कुल कमाई १.५६ करोड़ रुपये थी। अगले वित्त वर्ष में उनकी कमाई में बढ़ोतरी हुई। २०१९-२० में ये बढ़कर १.८२ करोड़ रुपये हो गई। २०२०-२१ में संजय की कमाई घटी और ये १.३६ करोड़ रुपये रही। वहीं, २०२१-२२ में कांग्रेस नेता की कमाई में बढ़ोतरी हुई और ये १.८३ करोड़ रुपये हो गई। २०२२-२३ में कमाई में फिर कमी हुई और ये १.५७ करोड़ रुपये रह गई।

किसके पास कितनी नकदी और बैंक जमा ?

शपथ पत्र में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने बताया है कि इस समय उनके पास ६४ हजार रुपये नकदी के रूप में हैं। उनकी पत्नी के पास ५० हजार रुपये नकद हैं। वहीं पारिवारिक संपत्ति के रूप में उनके पास ६४ हजार रुपये की नकदी है। कैलाश विजयवर्गीय के बैंक खातों में कुल २२.६७ लाख रुपये जमा हैं जबकि पत्नी के बैंक खातों में १०.६३ लाख रुपये जमा हैं।

इसके अलावा पारिवारिक संपत्ति के रूप में विजयवर्गीय के नाम पर २.६६ लाख रुपये बैंक में जमा हैं। विजयवर्गीय के २१ हजार रुपये जबकि उनकी पत्नी के ३५.७८ लाख रुपये कंपनियों और निधियों में शेयर हैं। भाजपा नेता को ३३ लाख रुपये और उनकी पत्नी को ५ लाख रुपये किसी व्यक्ति और निकाय को दिए ऋण और एडवांस से मिले हैं। कैलाश विजयवर्गीय के पास १३.०५ लाख रुपये जबकि पत्नी के पास ३६.१५ लाख रुपये के गहने हैं। इसके अलावा भाजपा नेता ने खुद के नाम पर ७८ हजार रुपये जबकि पत्नी के नाम पर ८७ हजार रुपये के दावों और हितों की जानकारी दी है। इस तरह से भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय के पास कुल १.६५ करोड़ रुपये की चल संपत्ति है। इसमें से कैलाश विजयवर्गीय के नाम ७०.६६ लाख रुपये, पत्नी के नाम ९१.६३ लाख रुपये और विजयवर्गीय के नाम पर २.६६ लाख रुपये की चल संपत्ति है।

कैलाश विजयवर्गीय के नाम 12.96 करोड़ की अचल संपत्ति

भाजपा नेता के नाम पर इंदौर के नंदानगर में एक आवासीय और एक वाणिज्यिक भवन है। वहीं, उनकी पत्नी के नाम पर इंदौर की माउन्ट सिटी में एक प्लाट है। कैलाश विजयवर्गीय ने कुल १२.९६ करोड़ रुपये की अचल संपत्ति अपने शपथ पत्र में बताई है। इस प्रकार से कैलाश के नाम पर कुल १४.६१ करोड़ रुपये की संपत्ति है।

संजय के साम्राज्य का लेखा-जोखा

कांग्रेस नेता ने बताया है कि इस वक्त उनके पास ३४.२४ लाख रुपये, पत्नी के पास १५.९४ लाख रुपये की नकदी है। संजय शुक्ला के बैंक खातों में ३.९१ करोड़ रुपये, पत्नी के बैंक खातों में १७.४९ करोड़ रुपये और पारिवारिक संपत्ति के रूप में संजय के बैंक खातों में ५.२१ लाख रुपये जमा हैं। संजय के नाम पर अकेले १२ बैंक खातों में पैसे जमा है जबकि दो खातों में एफडी कराई है। संजय की पत्नी अंजलि के ५ बैंक खातों जबकि पारिवारिक संपत्ति २ बैंक खातों में जमा है।

संजय के १७.९७ करोड़ रुपये, पत्नी के २.२३ करोड़ रुपये और पारिवारिक संपत्ति के रूप में संजय के नाम पर २.२८ लाख रुपये के कुल ४० कंपनियों और निधियों आदि में शेयर हैं। कांग्रेस नेता के ५.६७ करोड़ रुपये और उनकी पत्नी के १० लाख रुपये बचत योजनाओं, बीमा पालिसियों आदि में जमा हैं। कांग्रेस विधायक को २७.२८ करोड़ रुपये, उनकी पत्नी को २.१७ करोड़ रुपये और पारिवारिक संपत्ति के रूप में ९४.४४ लाख रुपये ९८ व्यक्तियों और निकायों को दिए ऋण और एडवांस से मिले हैं।

कांग्रेस नेता ने बताया कि उनके पास १.९८ करोड़ रुपये जबकि पत्नी के पास १.७५ करोड़ रुपये के गहने-जेवरात हैं। कांग्रेस विधायक ने खुद के नाम पर ६.४४ करोड़ रुपये, पत्नी के नाम पर ४२.६७ लाख रुपये और पारिवारिक संपत्ति रूप में कांग्रेस नेता के नाम पर ५६.४३ लाख रुपये के दावों और हितों की जानकारी दी गई है।

संजय के पास 142 वाहन

संजय के हलफनामे के अनुसार, उनके नाम पर १७.५७ करोड़ रुपये, पत्नी के नाम पर ११.५ लाख रुपये और परिवारिक संपत्ति के तौर पर संजय के नाम ४२०० रुपये के वाहन हैं। संजय शुक्ला के पास कुल १४२ वाहन हैं जिनमें एसएक्स४, स्विफ्ट से लेकर मर्सीडीज, बीएमडब्ल्यू जैसी कुल १२ कारें शामिल हैं। संजय के पास ५०,७०१ रुपये की सबसे सस्ती कार मारुति एसएक्स४ है जबकि ५०.३१ लाख रुपये की सबसे महंगी कार रेंज रोवर है।

658 रुपये की एक साइकिल भी

कांग्रेस विधायक क्रेन, जेसीबी, हाइड्रा क्रेन, ट्रैक्टर, ट्रक, ट्रेलर, ट्र ली और कंटेनर जैसी गाड़ियां १२१, आठ बाइक और स्कूटी, एक साइकिल भी खुद के पास रखते हैं। उन्होंने इस साइकिल की कीमत ६५८ रुपये बताई है। ८,१४८ रुपये की एक एक्टिवा, १८ लाख रुपये की एक जेसीबी, ५५ लाख रुपये की एक ट्र ली है। वहीं, पत्नी के नाम पर १० लाख रुपये की एक इनोवा कार है। वहीं पारिवारिक संपत्ति के रूप में संजय के नाम पर ४,२२७ रुपये का एक ट्रक भी है। इस तरह से कांग्रेस विधायक संजय शुक्ला के पास कुल ८६.८६ करोड़ रुपये की चल संपत्ति है। इसमें से संजय के नाम ८१.०८ करोड़ रुपये, पत्नी के नाम ७.१४ करोड़ रुपये और हिन्दु अविभिजाति पारिवार में १.६६ करोड़ रुपये की चल संपत्ति में उनकी हिस्सेदारी है।

संजय के पास कई गुना ज्यादा अचल संपत्ति, इंदौर में 6 घर

कांग्रेस विधायक के नाम पर १.६४ करोड़ रुपये १२ खेती की जमीन है। जबकि पत्नी अंजलि शुक्ला के नाम पर १०.४३ करोड़ रुपये की ६ खेती की जमीन हैं। कांग्रेस विधायक के नाम पर १७ हजार रुपये जबकि पत्नी के नाम पर ८१.५८ लाख रुपये की गैरें षि भूमि है। इसी तरह से कांग्रेस नेता के नाम पर ८.६३ करोड़ रुपये, पत्नी अंजलि के नाम पर ६३.५१ लाख रुपये और हिन्दू अविभाजित परिवार में २६.४६ लाख रुपये के रिहायशी घर में हिस्सेदारी, वाणिज्यिक भवन, प्लाट, दुकान और गोदाम हैं। अकेले संजय शुक्ला के नाम पर इंदौर में छह घर हैं। कांग्रेस विधायक ने कुल १२७ करोड़ रुपये की अचल संपत्ति अपने शपथ पत्र में बताई है। चल और अचल दोनों संपत्तियों को जोड़ें तो संजय शुक्ला के नाम पर २१७.४१ करोड़ रुपये की संपत्ति है।

कैलाश विजयवर्गीय पढ़ाई में आगे

कैलाश विजयवर्गीय ने वेतन, ब्याज और किराये से होने वाली कमाई को अपनी आमदनी का जरिया बताया है। वहीं, पत्नी की आमदनी के स्त्रोत वेतन, ब्याज और व्यवसाय बताए गए हैं। कैलाश विजयवर्गीय ने १९७४ में इंदौर के नंदानगर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से १२वीं की पढ़ाई की है।

वहीं १९७६ में इंदौर की गुजराती विज्ञान महाविद्यालय से बीएससी जबकि २००२ में इंदौर क्रिश्चियन महाविद्यालय से एलएलबी की डिग्री हासिल की। कैलाश विजयवर्गीय ने अपने हलफनामे में जानकारी दी है कि उनके खिलाफ पश्चिम बंगाल में पांच पुलिस केस दर्ज हैं। उधर कांग्रेस नेता संजय ने परिवहन, कार्गो हेंडलिंग, वेतन, कृषि आदि से होने वाली कमाई को अपनी आमदनी का जरिया बताया है। उनकी पत्नी को वेतन, कृषि और अन्य स्त्रोतों से कमाई होती है। संजय ने १९८५ में एमपी बोर्ड से १२वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है। संजय के खिलाफ में ६ पुलिस केस दर्ज हैं।

सीबीएसई 10वीं-12वीं की बोर्ड परीक्षा पर अपडेट

एजुकेशन डेस्क। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने कक्षा १०वीं और १२वीं की बोर्ड परीक्षा के लिए प्रैक्टिकल की तारीखें घोषित कर दी हैं। परीक्षा के लिए पंजीत उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट cbse-gov-in पर जाकर पूरा कार्यक्रम देख सकते हैं। बोर्ड की तरफ से अभी परीक्षा का विस्तृत कार्यक्रम नहीं जारी किया गया है। सीबीएसई की तरफ से कक्षा १०वीं और १२वीं की प्रैक्टिकल परीक्षाओं की तिथियां घोषित कर दी गई हैं। कक्षा १०वीं और १२वीं की प्रैक्टिकल परीक्षाएं ०१ जनवरी, २०२४ से शुरू होंगी। सीबीएसई बोर्ड परीक्षा २०२४ के लिए पंजीत परीक्षार्थी आधिकारिक वेबसाइट, बड़ेम.हवअ.पद, या अपने व्यक्तिगत संस्थानों के माध्यम से प्रैक्टिकल डेट शीट प्राप्त कर सकेंगे।

सीबीएसई कक्षा १०वीं और १२वीं की डेट शीट २०२४ आधिकारिक वेबसाइट-बड़ेम.हवअ.पद पर जारी की जाएगी। छात्रों को उनके संबंधित स्कूलों से डेटशीट भी मिल जाएगी। छात्र उम्मीद कर सकते हैं कि सीबीएसई बोर्ड परीक्षा की डेटशीट १७ नवंबर तक जारी हो सकती है।

सीबीएसई कक्षा ११ और कक्षा १२ के लिए ३० अंकों की प्रैक्टिकल परीक्षा आयोजित करता है। हालांकि, ग्रेड अलग-अलग विषयों में अलग-अलग होते हैं। सीबीएसई ने पहले शीतकालीन स्कूलों के लिए प्रैक्टिकल परीक्षा की तारीखों की घोषणा की थी। बोर्ड की डेट शीट के अनुसार, शीतकालीन स्कूलों के लिए सीबीएसई कक्षा १०, १२ की व्यावहारिक परीक्षा २०२४ १४ नवंबर, २०२३ से शुरू होगी और १४ दिसंबर, २०२३ तक चलेगी। सीबीएसई बोर्ड परीक्षा २०२४ कक्षा १०वीं और १२वीं कक्षा के लिए १५ फरवरी से शुरू होंगी।

दिल्ली शराब घोटाले में दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार बुरी तरह फंस चुकी है। आबकारी मंत्री मनीष सिसोदिया और आम आदमी पार्टी सांसद संजय सिंह पहले ही इस मामले में जेल में हैं, अब मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर भी जांच एजेंसियों का शिकंजा कसता हुआ दिखाई पड़ रहा है। लेकिन शराब घोटाले का मामला केवल दिल्ली तक ही नहीं रुकेगा। माना जा रहा है कि इसकी जांच की आंच में पंजाब सरकार भी झुलस सकती है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आम आदमी पार्टी के मोहाली से विधायक कुलवंत सिंह के घर और कार्यालय पर भी छापेमारी हो चुकी है। हालांकि, कुलवंत सिंह ने इसे सामान्य जांच का हिस्सा बताया है, लेकिन जानकारों की मानें, तो इसकी आंच में कुलवंत सिंह के साथ-साथ पंजाब सरकार के कुछ अन्य रसूखदार लोग भी सामने आ सकते हैं। शिरोमणि अकाली दल के नेता बिक्रम सिंह मजीठिया ने पहले ही इस तरह के आरोप लगाना शुरू कर दिया है।

दरअसल, कुलवंत सिंह पंजाब विधानसभा के सबसे अमीर विधायक हैं। वे रियल स्टेट के साथ-साथ शराब कारोबार से भी जुड़े बताये जाते हैं। उनकी रियल स्टेट कंपनी के कुछ मामलों में भी पहले जांच हो चुकी है।

बिन ब्याह मनाया करवाचौथ

देशभर में 1 अक्टूबर को करवाचौथ का पर्व मनाया गया। आम से लेकर खास तक इन दिन हर महिला अपने पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखी थी । पूरा दिन निर्जला व्रत रखने के बाद महिलाएं छलनी से चांद देखकर अपना व्रत पूरा करती हैं। जानी-मानी अभिनेत्रियों को भी ये त्योहार काफी पसंद है। इस दिन वह भी काफी सज-धज कर पूजा-पाठ करती नजर आती हैं। लेकिन इंडस्ट्री में ऐसी भी कई अभिनेत्रियां हैं, जो बिना शादी के भी करवाचौथ का व्रत रख चुकी हैं। वहीं कुछ अभिनेत्रियां तो अभी भी व्रत करती हैं। तो चलिए आपको बताते हैं कि टीवी की वह कौन सी अभिनेत्रियां हैं, जिन्होंने बिना शादी के यह त्योहार मनाया।

'ऐश' की जिंदगी जीती हैं ऐश्वर्या

ऐश्वर्या राय बच्चन की दमदार अदाकारी की ही नहीं, उनकी खूबसूरती की भी दुनिया दीवानी है। हिंदी सिनेमा को उन्होंने अपने दम पर कई सुपरहिट फिल्में दी हैं। उन्होंने अपनी अदाकारी का लोहा हिंदी सिनेमा ही नहीं, बल्कि साउथ सिनेमा में भी मनवाया है। अभिनेत्री को विश्व सुंदरी भी कहा जाता है। अभिषेक बच्चन से शादी के बाद भले ही ऐश्वर्या ने कम फिल्में की हों, लेकिन दमदार फिल्में कीं। इसके साथ ही वह कई खिताब अपने नाम कर चुकी हैं। अभिनेत्री ने १९९७ में फिल्म श्इरुवरश से अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। इस दम पर उन्होंने करोड़ों फैंस बनाए और इतने साल के करियर में उन्होंने करोड़ों की संपत्ति भी बना ली। आज अभिनेत्री अपना ५०वां जन्मदिन मना रही हैं।

पूर्व विश्व सुंदरी ऐश्वर्या राय बच्चन १०० मिनियन नेट वर्थ १०० मिलियन ड लर है। भारतीय रुपये के अनुसार ऐश्वर्या ८२६ करोड़ रुपये की संपत्ति की मालकिन हैं। ऐश्वर्या सिर्फ अभिनय से ही नहीं, बल्कि कई अन्य तरीकों से लाखों-करोड़ों रुपये की कमाई करती हैं। ऐश्वर्या अभिनय के साथ साथ म डलिंग, विज्ञापन और बिजनेस से भी तगड़ी कमाई करती हैं।

अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन का दुबई में एक आलीशान घर है। यहां जुमेराह गोल्फ एस्टेट के सैंक्चुअरी फ ल्स में उनका बंगला है, जिसकी कीमत लगभग १५ करोड़ रुपये से ज्यादा बताई जा रही है। ऐश्वर्या के पास मुंबई के बांद्रा-कुर्ला क म्प्लेक्स में ५ बीएचके का लग्जरी अपार्टमेंट है। इसे उन्होंने साल २०१५ में खरीदा था, जिसकी कीमत २१ करोड़ रुपये बताई जाती है। मुंबई के वर्ली में भी ऐश्वर्या का एक लग्जरी अपार्टमेंट है। इसकी कीमत लगभग ४१ करोड़ रुपये है।

रिपोर्ट्स के अनुसार, ऐश्वर्या राय एक फिल्म के लिए १० से १२ करोड़ रुपये फीस लेती हैं। सिर्फ विज्ञापनों से ही ऐश्वर्या की साल भर में ८० से ९० करोड़ रुपये की कमाई हो जाती है। कथित तौर पर ऐश्वर्या किसी भी ब्रांड के एंडोर्समेंट के शूट के लिए एक दिन का छह से सात करोड़ रुपये चार्ज करती हैं। इसके अलावा वह कई इंटरनेशनल ब्रांड्स का भी चेहरा हैं। इतना ही नहीं अभिनेत्री कई महंगी लग्जरी गाड़ियों की भी शौकीन हैं। महंगी कार का शौक रखने वाली ऐश्वर्या राय बच्चन के पास शानदार कार कलेक्शन है। उनके गाड़ियों के कलेक्शन में रोल्स र यस घोस्ट, मर्सिडीज बेंज, अ डी जैसी महंगी कारें शामिल हैं। इसके अलावा ऐश्वर्या राय बच्चन बिजनेस वुमन भी हैं। उद्योग से भी ऐश्वर्या की तगड़ी कमाई होती है। एक कंपनी में ऐश्वर्या ने करीब एक करोड़ रुपये निवेश किए हैं, जो एक एनवायरनमेंट इंटेलिजेंस स्टार्टअप है। ल रियाल पेरिस की ब्रांड एंबेसडर होने के कारण भी उनकी अच्छी कमाई हो जाती है।

अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन का दुबई में एक आलीशान घर है। यहां जुमेराह गोल्फ एस्टेट के सैंक्चुअरी फॉल्स में उनका बंगला है, जिसकी कीमत लगभग 15 करोड़ रुपये से ज्यादा बताई जा रही है। ऐश्वर्या के पास मुंबई के बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स में 5 बीएचके का लग्जरी अपार्टमेंट है। इसे उन्होंने साल 2015 में खरीदा था, जिसकी कीमत 21 करोड़ रुपये बताई जाती है। मुंबई के वर्ली में भी ऐश्वर्या का एक लग्जरी अपार्टमेंट है। इसकी कीमत लगभग 41 करोड़ रुपये है।

विज्ञापनों से ही ऐश्वर्या की साल भर में 80 से 90 करोड़ रुपये की कमाई हो जाती है।

अनुष्का शेट्टी और प्रभास की शादी कराना चाहते हैं घरवाले

अभिनेता की इस आदत की वजह से नहीं बन रही बात

एंटरटेनमेंट डेस्क। प्रभास पैन इंडिया स्टार हैं। फिल्म बाहुबली ने उनके करियर को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। अभिनेता इन दिनों अपनी आगामी फिल्म सालार को लेकर चर्चा में हैं। बीते महीने प्रभास ने अपना ४४वां जन्मदिन मनाया। अभिनेता की फिल्मों और करियर से अलग प्रशंसक उनकी निजी जिंदगी में भी खूब दिलचस्पी रखते हैं। फैंस की सबसे बड़ी चिंता है कि बाहुबली घर कब बसाएंगे। प्रभास के घरवाले भी यही चाहते हैं और खुद प्रभास को भी शादी से कोई दिक्कत नहीं, लेकिन उनकी एक आदत अड़चन बन रही है।

अनुष्का को नहीं कर रहे डेट

फिल्म बाहुबली के बाद प्रभास और अनुष्का शर्मा के अफेयर और डेटिंग की खबरें खूब वायरल हुईं। हालांकि, मीडिया रिपोर्ट्स में यह बात सामने आई कि प्रभास फिलहाल सिंगल हैं और वह अनुष्का को डेट नहीं कर रहे हैं। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रभास के घरवाले तो चाहते हैं कि वह अनुष्का के साथ घर बसा लें। लेकिन, प्रभास और अनुष्का के बीच सिर्फ दोस्ती का रिश्ता है और वे इसे ही जारी रखना चाहते हैं।

यह बात बन रही शादी में समस्या!

प्रभास का परिवार चाहता है कि वे अब सैटल हो जाएं। प्रभास भी परिवार के इस विचार के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन उनका स्वभाव इस मामले में अचड़न बन रहा है। दरअसल, प्रभास बहुत सामाजिक नहीं हैं। उनका कहना है कि वह बहुत कम बाहर जाते हैं। वह काम के सिलसिले में ही बाहर निकलते हैं और अधिकांश समय सेट पर ही बिताते हैं। वह बर्थडे पार्टीज तक में जाना पसंद नहीं करते हैं।

शाहरुख की फिल्म से होगा मुकाबला

प्रभास की आगामी फिल्म श्सालारश की बात करें तो यह फिल्म इसी साल २२ दिसंबर को रिलीज होगी। फिल्म की भिड़ंत शाहरुख खान की फिल्म डंकी से होने जा रही है। बता दें कि साहो, राधे श्याम और आदिपुरुष-प्रभास की ये तीनों फिल्में लगातार फ्लाप गई हैं, ऐसे में करियर के लिहाज से उनकी उम्मीदें सालार पर टिकी हैं। देखना दिलचस्प होगा कि किंग खान के आगे वह कितने कामयाब होते हैं।

हार्दिक पांड्या के चोटिल होने से भारत की बड़ी परेशानी हुई दूर

स्पोर्ट्स डेस्क। हार्दिक को चोट लगने पर लगा था कि भारत को आगे मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही टीम सिलेक्शन को लेकर एक बार फिर परेशानी खड़ी हो जाएगी। हालांकि, यह भारतीय टीम के लिए आपदा में अवसर साबित हुआ। भारतीय टीम शानदार फार्म में है। उसने अभी तक अपने छह के छह मुकाबले जीते हैं। टीम अंक तालिका में भी शीर्ष पर है। भारतीय टीम को अपने पहले मैच में अ स्ट्रेलिया के खिलाफ और फिर न्यूजीलैंड के खिलाफ ही मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। इसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ भी बल्लेबाजी में थोड़ी बहुत चुनौती मिली। वरना बाकी के मुकाबले भारत ने काफी आसानी से जीते हैं। भारत ने अपने पहले मैच में चेन्नई की स्पिन ट्रैक पर अश्विन को मौका दिया था। उसके बाद बांग्लादेश के खिलाफ हर मैच तक टीम इंडिया एक एक्स्ट्रा पेसर शार्दुल ठाकुर के साथ उतरी।

पापदा में अवसर लेकर आया हार्दिक पांड्या का चोटिल होना

इस प्लेइंग क म्बिनेशन में पांच बल्लेबाज, दो अ लराउंडर, तीन तेज गेंदबाज और एक स्पिनर खेल रहे थे। हार्दिक पांड्या पेस बालिंग आलराउंडर और रवींद्र जडेजा स्पिन आलराउंडर के तौर पर टीम में थे। हालांकि, बांग्लादेश के खिलाफ मैच में हार्दिक के टखने में चोट लगी और टीम इंडिया को बड़ा झटका लगा। इस काम्बिनेशन के साथ भी भारत जीत रहा था, लेकिन शार्दुल की गेंदबाजी कुछ खास नहीं रही थी।

हालांकि, कप्तान रोहित ने उन पर भरोसा जताते हुए कहा था कि शार्दुल बड़े मैच का प्लेयर है। हार्दिक को चोट लगने पर लगा था कि भारत को आगे मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही टीम सिलेक्शन को लेकर एक बार फिर परेशानी खड़ी हो जाएगी। इतना ही नहीं भारत के पास छठे गेंदबाज की समस्या भी खड़ी हो जाएगी। भारत को पांच ही गेंदबाजों के साथ उतरना होगा। हालांकि, हार्दिक का चोटिल होना भारत के लिए आपदा में अवसर साबित हुआ।

न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच से गेंदबाजी हुई मजबूत

बांग्लादेश के बाद भारत का अगला मैच न्यूजीलैंड से था। बांग्लादेश के खिलाफ मैच तक भारतीय बल्लेबाज मैच जिता रहे थे। विराट कोहली चेज मास्टर साबित हुए थे। हालांकि, न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच से भारत के लिए सबकुछ बदल गया। बल्लेबाज की जगह अब गेंदबाज मैच विनर साबित हो रहे हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में रोहित ने हार्दिक की जगह सूर्यकुमार यादव के रूप में एक अतिरिक्त बल्लेबाज और शार्दुल की जगह मोहम्मद शमी के रूप में एक अतिरिक्त गेंदबाज को मौका दिया।

रोहित का यह फैसला मास्टरस्ट्रोक साबित हुआ। बड़े स्कोर की तरफ बढ़ रही न्यूजीलैंड की टीम को शमी ने पांच विकेट लेकर झकझोर कर रख दिया। इसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ भारत की बल्लेबाजी कुछ खास नहीं रही थी और टीम सिर्फ २२६ रन ही बना सकी थी। शमी ने इस मैच में बुमराह के साथ मिलकर इंग्लैंड की पारी को तहस नहस कर दिया। दोनों ने मिलकर सात शिकार किए। इसमें शमी ने चार और बुमराह ने चार विकेट लिए।

अब कम्प्लीट दिख रही है टीम इंडिया

जहां कुछ मैच पहले तक सिराज और बुमराह भारत के पेस अटैक को लीड कर रहे थे, अब शमी और बुमराह भारत के पेस अटैक की जान बन गए हैं। इन दोनों ने अब तक गेंदबाजी में एक अतिरिक्त गेंदबाज की कमी नहीं खलने दी है। रही सही कसर भारत की स्पिन जोड़ी रवींद्र जडेजा और कुलदीप यादव पूरी कर दे रहे हैं। इस तरह हार्दिक के चोटिल होने से भारतीय टीम के चयन की समस्या दूर हो गई। टीम को सही प्लेइंग क म्बिनेशन मिला है। हालांकि, हार्दिक पूरी तरह बाहर नहीं हुए हैं और मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टीम मैनेजमेंट उन्हें न कआउट में खेलता देखना चाहता है। हालांकि, अभी जो टीम खेल रही है वह कम्प्लीट दिख रही है।

श्रेयस या सूर्या की जगह खेल सकते हैं हार्दिक

इंग्लैंड के खिलाफ सूर्यकुमार के बहुमूल्य ४६ रन से भारत २२६ रन तक पहुंच सका था। हार्दिक अगर वापस भी लौटते हैं तो कुछ खास नहीं कर सके श्रेयस अय्यर या सूर्या में से किसी एक को बाहर कर हार्दिक को मौका दिया जा सकता है। इससे छठे गेंदबाज की समस्या भी दूर होगी और शमी के रूप में घातक गेंदबाज भी टीम के पास होगा। हार्दिक गेंद के साथ साथ बल्ले से भी बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं और कई मौकों पर उन्होंने ऐसा किया भी है। हार्दिक की चोट ने आपदा में अवसर का काम किया है और शमी के लिए यह एक ऐसा मौका लेकर आया, जिसे उन्होंने दोनों हाथों से स्वीकार किया।

2003 में भी बनी थी ऐसी स्थिति, फाइनल में भुगतना पड़ा था

२००३ विश्व कप में जब टीम इंडिया फाइनल में पहुंची थी तो उससे पहले तक तीन खिलाड़ियों को एक भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला था। वे खिलाड़ी थे- अजीत अगरकर, पार्थिव पटेल और संजय बांगर। वहीं, दिग्गज अनिल कुंबले को भी सिर्फ तीन मैचों में मौका मिला था। वह हालैंड, आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के खिलाफ लीग स्टेज का मुकाबला खेले थे। कप्तान सौरव गांगुली ने दिनेश मोंगिया को बतौर आलराउंडर हर मैच में मौका दिया था। फाइनल में भी मोंगिया को कुंबले पर तरजीह दी गई थी और अ स्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबला खेले थे। रिकी पोंटिंग और डेमियन मार्टिन ने मोंगिया पर खूब रन बटोरे थे। मोंगिया ने सात ओवर में ३६ रन खर्च किए थे और कोई विकेट नहीं लिया था। भारत ने उस मैच में कुंबले को बहुत बुरी तरह से मिस किया था। उस मैच का हिस्सा भारत के मौजूदा कोच राहुल द्रविड़ भी थे। भारतीय टीम अब ऐसी गलती नहीं करना चाहेगी। हार्दिक अगर वापस आते हैं तो शार्दुल को लाने की बजाय रोहित और द्रविड़ शमी को ही मौका देने पर विचार कर सकते हैं।

भारतीय टीम जहां सातवीं जीत दर्ज कर सेमीफाइनल में जगह बनाने उतरेगी, वहीं श्रीलंकाई टीम 2011 का बदला लेने उतरेगी। साथ ही श्रीलंका को इस विश्व कप में जिंदा रहने के लिए भी जीत जरूरी है। हारने पर टीम की स्थिति खतरे में पड़ जाएगी।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

विश्व कप 2023 में आज दो बार की चौंपियन भारत का सामना 1996 के विजेता श्रीलंका से है। यह इस विश्व कप का 33वां मुकाबला होगा और मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला जाएगा। यह वही मैदान है जहां भारत ने 12 साल पहले श्रीलंका को विश्व कप के फाइनल में शिकस्त दी थी। 2011 विश्व कप के फाइनल में भारत ने श्रीलंका को सात विकेट से हराया था।

आईसीसी टूर्नामेंट्स में दोनों टीमों का रिकार्ड

अब जब दोनों टीमें इस मैदान पर आमने–सामने आएंगी तो यादें ताजा हो जाएंगी। भारतीय टीम जहां सातवीं जीत दर्ज कर सेमीफाइनल में जगह बनाने उतरेगी, वहीं श्रीलंकाई टीम 2011 का बदला लेने उतरेगी। साथ ही श्रीलंका को इस विश्व कप में जिंदा रहने के लिए भी जीत जरूरी है। हारने पर टीम की स्थिति खतरे में पड़ जाएगी।

दिल्ली। आईसीसी टूर्नामेंट्स में दोनों टीमों के रिक र्ड की बात करें तो दोनों टीमें कुल १४ आमने-सामने आ चुकी हैं। इनमें चौंपियंस ट्र फी, वनडे विश्व कप और टी२० विश्व कप शामिल है। आईसीसी टूर्नामेंट में दोनों टीमें सबसे पहले १९७९ में भिड़ी थीं। श्रीलंका ने मैनचेस्टर में खेले गए उस मुकाबले में भारत को ४७ रन से हराया था। भारत का श्रीलंका के खिलाफ आईसीसी टूर्नामेंट्स में रिकार्ड खराब रहा है। १४ मैचों में से सात मैच श्रीलंका ने जीते हैं, जबकि भारत ने पांच मुकाबले जीते हैं। दो मैचों का कोई नतीजा नहीं निकला। दोनों टीमों के बीच आईसीसी टूर्नामेंट के १४ मैचों में से वनडे विश्व कप में नौ मुकाबले खेले गए हैं, जबकि चौंपियंस ट्र फी में तीन मैच और टी२० विश्व कप में दो मुकाबले खेले गए हैं। वनडे विश्व कप में दोनों के बीच खेले गए नौ मैचों में से चार मैच भारत और चार मैच श्रीलंका ने जीते हैं। एक मैच का कोई नतीजा नहीं निकला। भारतीय सरजमीं पर दोनों के बीच विश्व कप के तीन मैच खेले गए हैं। इनमें से श्रीलंका ने दो मुकाबले जीते, जबकि भारत को एक में जीत मिली। चौंपियंस ट्र फी में तीन मुकाबले में से भारत ने दो जीते हैं, जबकि एक का कोई नतीजा नहीं निकला। टी२० विश्व कप में भारत आज तक श्रीलंका से कोई मुकाबला नहीं जीत पाया है।१२ साल पहले ही इसी मैदान पर वानखेड़े स्टेडियम पर भारतीय टीम ने श्रीलंका को ही हराकर विश्व कप ट्र फी जीती थी। विश्व कप २०११ का फाइनल मैच भारत और श्रीलंका के बीच बराबरी का था, लेकिन इस बार यह टक्कर का नहीं माना जा रहा है। भारतीय टीम शानदार फार्म में है तो श्रीलंका की टीम हार से परेशान है। भारतीय टीम को अब तक कोई चुनौती नहीं मिली है और हर विभाग में एक विजेता की तरह प्रदर्शन किया है।

अभी तक टूर्नामेंट में कठिन हालात में भारत ने वापसी करके जीत दर्ज की है। अ स्ट्रेलिया के खिलाफ पांच रन पर तीन विकेट गंवाना और इंग्लैंड के खिलाफ नौ विकेट पर २२६ रन के साधारण स्कोर के बावजूद जीत हासिल की। रोहित शर्मा की टीम को हराने के लिए विपक्षी टीम को सर्वश्रेष्ठ करना होगा।

शमी ने किया प्रभावित

हार्दिक पांड्या की गैर मौजूदगी में तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को मौका दिया गया जिन्होंने दो मैचों में नौ विकेट लेकर प्रभावित किया। उन्हें तेज गेंदबाजी आक्रमण को मजबूत कर दिया। उनके रहने से शार्दुल ठाकुर को मौका मिलना मुश्किल है। शमी के शानदार प्रदर्शन से सिराज के ऊपर भी बेहतर करने का दबाव रहेगा। विपक्षी टीमों के बल्लेबाज शमी को आसानी से नहीं खेल पा रहे हैं और श्रीलंकाई बल्लेबाजों के लिए भी उन्हें खेलना आसान नहीं रहेगा।

छह मैचों में अय्यर का एक अर्धशतक

टूर्नामेंट में सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल और श्रेयस अय्यर बड़ी पारी नहीं खेल पाए हैं। गिल डेंगू के कारण पहले दो मैच नहीं खेल सके थे और वापसी के बाद भी सिर्फ एक अर्धशतक लगा पाए हैं। वहीं, श र्ट पिच गेंदों के खिलाफ श्रेयस अय्यर की कमजोरी सभी को पता है और उन्होंने इससे निजात पाने के लिए कड़ा अभ्यास भी किया। अय्यर ने छह मैचों में सिर्फ एक अर्धशतक लगाया है। कई मौकों पर वह फिनिशर की भूमिका निभाने में नाकाम रहे। दोनों बल्लेबाजों को बड़ी पारी खेलने की जरूरत है।

घरेलू मैदान पर खेलेंगे रोहित और सूर्यकुमार

कप्तान रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव वानखेड़े स्टेडियम उनका घरेलू मैदान है। दोनों बल्लेबाज अपनी पारियों से घरेलू प्रशंसकों का मनोरंजन करना चाहेंगे। रोहित शानदार फार्म में हैं और पावरप्ले में आक्रामक बल्लेबाजी कर रहे हैं। वहीं, सूर्यकुमार अपने घरेलू मैदान पर एक और पारी तेजतर्रार पारी खेलने उतरेंगे।

निसांका और समरविक्रमा अच्छी फार्म में

श्रीलंका के लिए सदीरा समरविक्रमा ने छह मैचों में सर्वाधिक ३३१ रन बनाए हैं जिसमें एक शतक शामिल है। पाथुम निसांका ने भी इस साल एक हजार से अधिक वनडे में रन बनाए हैं। विश्वकप में उन्होंने लगातार चार अर्धशतक जड़े हैं। कप्तान कुसल मेंडिस और एंजेलो मैथ्यूज के रूप में श्रीलंका के पास मैच विजेता खिलाड़ी हैं। श्रीलंकाई गेंदबाजों की भारतीय बल्लेबाजों के सामने कड़ी परीक्षा होगी।